ॐ

गीता जन्मस्थली

एवम्

धर्मक्षेत्र अदितिवन, चक्रापुरी (अमीन)

स्थित

सूर्यकुण्ड माहात्म्यम्

[The Importance of Suryakund]

दृष्ट्वा तु पांडवनीकं व्यूढं दूर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसंगम्य, राजा वचनमब्रवीत् ॥

M/s. Rohilla Book Depot & Photostate
Amin (Kurukshetra) 9416228194

लेखक :
वैद्य शादी राम वाशिष्ठ
प्रभाकर
(सोशल वर्कर, थानेसर व नीलोखेड़ी (ब्लाक)
फतुहपुर (अमीन)
जिला कुरुक्षेत्र

सर्वाधिकार लेखक के अधीन हैं

दूसरा संस्करण : 1000 प्रतियां, अगस्त 1998

मूल्य : /- रुपये केवल मात्र

प्रकाशक :
वैद्य शादी राम वाशिष्ठ
प्रभाकर
फतुहपुर (अमीन)

नम्र निवेदन

आदरणीय पाठको !

इस पुस्तक में हम आपके साथ गीता जन्म-स्थली के बारे में विचार विमर्श करेंगे।

अम्बाला शहर से प्रकाशित होने वाली गीता जयन्ती पत्रिका में मैंने एक लेख पढ़ा था जिस में लिखा था कि :—

1. कुरुक्षेत्र भूमि में धर्मक्षेत्र कहां है ?
2. अदिति ने तपस्या कहां की ?
3. सूर्य जन्म जिस स्थान पर हुआ वह सूर्यकुण्ड कहां है ?
4. गीता उपदेश पहली बार युद्ध के समय भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को किस स्थान पर दिया ?

1. आठ कोसी परिक्रमा कुरुक्षेत्र की अपनी परिधि है जो प्रति वर्ष चैत्र मास की चतुर्दशी को सम्पन्न की जाती है और खेड़ी रामनगर की उत्तरीय दिशा से होकर गुजरती है। इससे आगे धर्मक्षेत्र की सीमा तरावड़ी के उत्तरीय दिशा में बहने वाली राक्षी नदी जिसका नाम (दृष्द्वती) है तक मानी जाती है। इस भाग को त्रिविष्टप (स्वर्ग) की संज्ञा दी गई है तथा इस क्षेत्र को धर्मारण्य भी कहा गया है।

2. भाद्रपद शुक्ला षष्टी को प्रति वर्ष अमीन सूर्यकुण्ड पर मेला सदियों से लगता चला आ रहा है जो सूर्य जन्म का द्योतक है।

Scanned by CamScanner

3. अदिति और कश्यप की समाधि सूर्यकुण्ड पर विद्यमान है। मनु-शतरूपा की प्राचीनतम पत्थर की मूर्तियां जो चोरी होकर विलायत में 60 हजार डालर की बेची गई थी वह भी आज तक इस स्थान पर विद्यमान हैं जो इस स्थान को प्राचीनतम होने का सबूत पेश करती हैं।

4. अब गीता उपदेश के बारे में विचार इस प्रकार है :— गीता जयन्ती के लेख को पढ़कर यह शंका उत्पन्न हुई थी कि वर्तमान गीता उपदेश स्थान विद्वानों को उचित नहीं लगता क्योंकि शास्त्रों के अनुसार कुरुक्षेत्र के पश्चिम में जहां से काम्यवन आरम्भ में होता है—काम्यवन में, युद्धक्षेत्र की पश्चिम दिशा से युद्ध आरम्भ के समय पहले दिन होने वाला गीता उपदेश असंगत है, धर्मयुद्ध तो क्षेत्र की पूर्व दिशा से आरम्भ होता है। इसका प्रमाण (रघुवंश में—पांडव विजय प्रकरण में देखें)।

5. धर्म की स्थापना हेतु भगवान कृष्ण अवतरित हुए जिन्होंने अधर्म का नाश और धर्म की वृद्धि हेतु गीता उपदेश दिया। काम्यवन की भूमि धर्मरूपी बीज को उपजाने में असमर्थ होती है। यह धर्मबीज तो धर्मक्षेत्र में ही फलता-फूलता है जो विश्व के कोने-कोने में गीता ग्रन्थ का रूप लेकर पहुंच चुका है। इसलिए धर्मक्षेत्र अदिति-वन सूर्यकुण्ड (अमीन) ही उचित स्थान है जहां शिव (यक्ष) का प्राचीन मन्दिर है और दक्षिण में शमशान घाट विद्यमान है। यहां से ही भगवान श्री कृष्ण ने रथ से उतर कर दोनों सेनाओं के बीच में खड़े होकर जो सूर्य धर्म-धूरि पर स्थिर होकर आज तक कार्य कर रहा है जिसका प्रमाण यक्ष-युधिष्ठर के सम्वाद में पहले प्रश्न का उत्तर है, उसी धर्म-धूरि पर खड़ा होकर कुरुक्षेत्र में स्थित सुसज्जित सेनापति भीष्म और द्रोण को दिखाया। जिसे देखकर अर्जुन ने शस्त्र डाल दिए और गीता ज्ञान सुनकर युद्ध आरम्भ किया। गीता के चतुर्थ अध्याय के पहले श्लोक में यह ज्ञान विष्णु-रूप में युग के आरम्भ में मैथुनि सृष्टि से सूर्यजन्म होने पर सबसे पहले इसी स्थान पर सूर्य को दिया था जो सफल रहा, इसलिए सफलता हेतु आज तुझे दिया गया है। तुम्हारी अवश्य विजय होगी।

जन्म-स्थली की योग्यताएं

1. जो स्थान मैथुनि सृष्टि की जन्म-स्थली है।
2. जो स्थान वामन भगवान का जन्मदाता है।
3. जिस स्थान पर भीष्म, परशुराम के युद्ध का निर्णय हुआ।
4. जिस स्थान पर अम्बा ने तपस्या की।
5. जिस स्थान पर चक्रव्यूह की रचना हुई।
6. शकट-व्यूह, अभय-चक्र, रथ-चक्र आदि का निर्माण हुआ, जहां भीष्म दस दिन तक लड़ते रहे।
7. जिस स्थान पर कर्ण के रथ का पहिया धंसा।
8. जहां देवताओं के तीर्थ नगरी के चारों ओर स्थित हैं। जिन की वजह से चक्रापुरी नाम पड़ा।
9. जिस स्थान के सूर्यकुण्ड में तीन कोटि तीर्थों का जल नीचे ही नीचे आता है, जो अमृत माना जाता है।
10. जिस स्थान के साथ व्यूह शब्द जिसका गीता ग्रन्थ में संकेत दिया गया है वह व्यूह शब्द आज तक चक्रव्यूह से जुड़ा हुआ गांव अमीन ही है। यह अलंकार कुरुक्षेत्र भूमि के किसी अन्य स्थान को आज तक प्राप्त नहीं है।
11. जिस स्थान को 1976 में आने वाली अमरीकी वैज्ञानिकों की पार्टी ने प्राचीनतम स्थान घोषित करके यह दावा किया था कि गीता ज्ञान अमीन सूर्यकुण्ड से सुना जा सकता है। ऐसे स्थान को छोड़कर गीता जन्म-स्थली का महत्त्व गांव अमीन (सूर्यकुण्ड) के सिवाय किसी और स्थान को देना उचित नहीं है।

—लेखक

कुछ स्थानों की जानकारी

कुरुक्षेत्र भूमि-द्वार "रतगल यक्ष स्तूप" तुरन्तक से अदितिवन

1. सूर्यकुंड स्थित "अरन्तुक यक्ष" स्तूप तक।
2. लाक्षागृह से बचकर पांडव रात्रि निवास "चौरी डावर" अमीन कुरुक्षेत्र रेलवे लाईन पुल के समीप।
3. हिडम्ब का स्थान—अमीन कुरुक्षेत्र सड़क के समीप गांव के उत्तर में।
4. सोमतीर्थ—गांव अमीन के दक्षिण में जहां से प्राचीन मूर्तियां पाई गई थीं। वहीं पर "आसारे कदीमा" के बोर्ड लगे हैं।
5. गगाना—गांव के पश्चिम में।
6. बीजांवाली—गांव के पश्चिम में।
7. दलेही—अमीन माईनर के पुल के समीप।
8. गोमतीर्थ—पानी की टंकी के पास।
9. कोह—खेड़ी राम नगर गांव के समीप ऊंचे टीले। यहां से धर्मक्षेत्र आरम्भ होता है।
10. आम्बा—गांव के पूर्व में।
11. सूर्यकुंड—गांव के पूर्व में।
12. अदिति कुंड—सूर्यकुंड से मिलता हुआ।
13. वामन कुंड—सूर्यकुंड जाने वाली सड़क के दक्षिण हाथ।
14. नारायण कुंड—वामन कुंड से मिलता हुआ पूर्व दिशा में।
15. चक्रव्यूह किले के चिन्ह—गांव की आबादी के ऊंचे टीले।
16. पांडव कूप—किले के ऊपर 100 फुट की ऊंचाई पर जिसमें सूर्यग्रहण के समय पानी दुधिया रंग का हो जाता था।
17. चक्रव्यूह की ईंटें—प्रत्येक खण्डहर से प्राप्त होती हैं।
18. भूगर्भबावड़ियां—सूर्यकुंड के आस-पास के स्थानों में अब तक चिन्ह कई स्थानों पर पाए जाते हैं।

Scanned by CamScanner

कुछ आवश्यक संकेत

1. आज भी माल रिकार्ड में अमीन क्षेत्र को अदितिवन लिखा मिलता है ।
2. व्यूह शब्द का प्रयोग आज तक अमीन गांव के साथ जुड़ा चला आ रहा है । जहां चक्रव्यूह आदि माने गए हैं ।
3. धर्मक्षेत्र में ही, धर्म की रक्षा करने वाले भगवान कृष्ण ने धर्मग्रन्थ गीता का ज्ञान धर्मयुद्ध को लड़कर निर्णय हेतु धर्मस्थान पवित्र तीर्थ "ज्योति पुंज" सरोवर पर दिया। जो सूर्यकुंड का पर्यायवाची शब्द है ।
4. रक्त से रंजित भूमि आज भी चौंरी डाबर में जहां "अमन कुमार" के फेरे "घटोत्कच" की सहायता से हुए थे । पाई जाती है ।
5. 'जयद्रथ जोहड़' जो अमीन बराणी गोहर में है, वहां भी रक्त से रंजित मिट्टी पाई जाती है ।
6. ज्ञान देने के लिए भूमि, देश, काल और परिस्थिति अनुकूल निश्चित है । वह सब कुछ यहां सूर्य को प्रथम ज्ञान देने के समय से उपयुक्त है ।
7. इसी ज्ञान का नाद आज तक इस स्थान के कण-2 में गूंजता है । यही कारण था कि युधिष्ठिर ने यक्ष के प्रश्नों के उत्तर उसी "नीत्य शब्द" को समझ कर दिए थे ।
8. इन्हीं गुणों से सम्पन्न होने के कारण गीता ज्ञान भी युद्ध के प्रथम दिवस अर्जुन को विराट रूप (छाया पुरुष) दिखाकर भगवान ने इसी स्थान पर कर्मयोग का ज्ञान दिया । लिखा भी है :—

धुंधली सी समझो तुम इस की मिसाल ।
महा-आत्मा का था जाहो जलाल ॥

तब अर्जुन ने देखा कि जलवा नुमां,
सभी देवताओं का वो देवता ।
उसी के तने पाक में है अयां,
गिरोंहों में गोलों में सारा जहां ।

तब अर्जुन को इस दर्जा हैरत हुई,
कि सहमा जरा और लगी कंपकपी ।
हुजूरे खुदावन्द में सर झुका,
वो यों जोड़ कर हाथ कहने लगा ।

कभी कहा कृष्ण मैंने तुमको,
कभी कहा मैंने दोस्त यादव ।
मैं वे तक्ल्लुफ यही समझता,
रहा कि यार आशना तुम्हीं हो ।

इसे समझ लो मेरी मुहब्बत,
इसे समझ लो मेरी जहालत ।
न पहिले अफसोस मैंने समझा,
कि शाहे अर्जो समा तुम्हीं हो ।

भगवान ने कहा :—
ये राज उस से मत कह जो जाहद न हो,
ये राज उस से मत कह जो आयद न हो ।
न उस में जो हो वदजुबां नुक्ता चीं,
न उस से जो सुनने का ख्वांहां नहीं ।

मेरा भक्त होकर व अजजो नयाज,
जो भक्तों से मेरे कहेगा ये राज ।
उन्हें सरे-आली बना जाएगा,
वे शक मेरा वस्ल पा जाएगा ।

कहां इस से बढ़कर है इन्सा कोई,
करे ऐसी प्यारी जो सेवा मेरी ।
मुरव्वत की आंखों का तारा है वो,
मुझे सारी दुनियां से प्यारा है वो ।

पढ़ेगा ना कोई वराहे सवाब,
हमारे मुक्कदस सवालो जवाब ।
मैं समझूंगा उसने किया ज्ञान यज्ञ,
इबादत में मेरी किया ज्ञान यज्ञ ॥

फकत जो सुन दिल में रख के यकीं,
निकाले न ऐब और न हो नुकता चीं ।
गुनाहों से वो मुखलसी पाएगा,
वो नेकों की दुनियां में आ जाएगा ।

सुना तूने अर्जुन ये मेरा कलाम,
न तावाए यकसूए तूने तमाम ।
बता तेरे दिल में धनजम कहीं,
फरेबे जहालत गया या नहीं ।

पुकारा तब अर्जुन ने ए लाईजाल,
हुआ दूर शक और फरेबे ख्याल ।
पता चला गया दिल है, मजबूत अब,
बजा लाऊंगा आपके हुकम सब ।

(गीता 'दिल')—यहां से गीता ज्ञान की प्रेरणा मिलती है ।

विषय-सूची

1. गीता जन्म-स्थली एवम् अदितिवन, चक्रापुरी एवं सूर्यकुण्ड महात्म्यम् ... 1
2. विशेष पुण्य-प्रद का कारण ... 2
3. नदियां ... 2
4. देवताओं का इस स्थान के प्रति आदर ... 3
5. अदिति माता का परिचय ... 4
6. भगवान वामन का जन्म और अदिति तप ... 5
7. महाभारत युद्ध से पूर्व अदितिवन में पांडव ... 8
8. हिडम्ब और हिडम्बा का प्रसंग ... 10
9. हिडम्ब की मृत्यु ... 11
10. चक्रापुरी का वर्णन, पांडवों का प्रवेश ... 12
11. बकासुर का वध ... 13
12. खाण्डवप्रस्थ में पांडव ... 15
13. द्यूत का खेल ... 16
14. पांडव वनवास ... 17
15. ताम्रपात्र की प्राप्ति ... 20
16. कोर्मीर राक्षस का वध ... 20
17. मार्कण्डेय का आगमन ... 22
18. इन्द्रकीलक पर्वत ... 23

Scanned by CamScanner

19. मूक नामक दैत्य का वध ... 23
20. किरातार्जुन युद्ध ... 24
21. इन्द्रपुरी में अर्जुन की नपुंसकता ... 25
22. यक्ष-युधिष्ठिर संवाद ... 30
23. 'युद्धस्थल', धर्मक्षेत्र (अदितिवन) बनाने हेतु दोनों पक्षों में अलग-2 विचार विमर्श ... 40
24. कौरव सभा में भीष्म द्वारा अदितिवन धर्मक्षेत्र की महिमा ... 40
25. अम्बा के विचार ... 41
26. परशुराम की शान्ति का वर्णन ... 41
27. तीनों लोकों में कुरुक्षेत्र भूमि का महात्म्यम् ... 42
28. चक्रापुरी (अमीन नगरी) महात्म्यम् ... 44
29. भीष्म द्वारा सूर्यकुण्ड की भूगौलिक स्थिति का वर्णन तथा महात्म्यम् ... 45
30. स्वस्तिक चक्रापुरी के तीर्थों का महात्म्यम् ... 46
31. भारत के पुण्य तीर्थों में सूर्यकुण्ड का महात्म्यम् ... 48
32. अदितिवन के तीर्थों में सूर्यकुण्ड का महात्म्यम् ... 49
33. परशुराम द्वारा अदितिवन की प्रशंसा ... 50
34. भाद्रपद शुक्ला षष्टी पर्व पर सूर्यकुण्ड स्नान महात्म्यम् ... 51
35. श्रीमद्भगवद् गीता द्वारा सूर्यकुंड की महानता का वर्णन ... 52

गीता जन्म–स्थली
एवम्
अदितिवन, चक्रापुरी एवं सूर्यकुण्ड महात्म्यम्

विनय श्लोक : - स्वयंभूर्भगवान् ब्रह्मा-व्यक्तो व्यक्त सनातनः।
आदित्यादि तेषांश्च-आदि देवम्-उपास्महे॥

स्थिति :—अदितिवन ही धर्मक्षेत्र अथवा पुण्य क्षेत्र है, जहां पर महाभारत का युद्ध लड़ा गया, इस रहस्य को भली-भांति जानने के लिए, हमें कुरुक्षेत्र भूमि की परिधि का ध्यान करना आवश्यक है। कुरुक्षेत्र भूमि 48 कोस तक विस्तृत मानी गई है।

श्लोक :—तुरन्तकारुन्तक योर्यदन्तरं।
रामह्रदानां च मचक्रुकस्यच॥
एतत् कुरुक्षेत्र समन्त पंचक।
पितामहस्योत्तर वेदिरुच्यते॥

अर्थ :—तुरन्तुक और अरुन्तक तथा रामह्रद और मचक्रुके स्तूप-चिन्ह के बीच स्थित भूमि भाग को कुरुक्षेत्र भूमि माना गया है। इस भूमि भाग को समन्त पंचक तथा ब्रह्मा जी की उत्तरवेदी भी कहा गया है।

विशेष पुण्यप्रद का कारण

इस भूमि खण्ड में सात वन और सात नदियों का बहना है। (1) आदिवन (2) काम्यवन (3) व्यासवन (4) फलकीवन (5) सूर्यवन (6) मधुवन (7) सीतावन। इन वनों में अनेक तीर्थ हैं जहां ऋषियों, मुनियों ने तपस्याएं की हैं।

(संक्षिप्त नारद पुराण पृष्ठ 583)

नदियाँ

(1) सरस्वती (2) वैतरणी (3) मन्दाकिनी गंगा (4) मधुस्रवा (5) दृषद्वती (6) कौशिकी (7) हैरण्यवती। इनमें सरस्वती नदी को छोड़कर शेष सब नदियां केवल वर्षाकाल में ही बहती हैं। इनका जल पीने तथा स्नान करने में बहुत ही पवित्र माना गया है। पुण्य क्षेत्र में बहने के कारण इनमें राजस्वलापन का दोष नहीं आता यह बात विज्ञान द्वारा सिद्ध हो सकती है।

प्रथम द्वारपाल यक्ष अरुन्तक को नमस्कार करके अदितिवन स्थित सूर्यकुण्ड के जल को स्पर्श करें तभी कामना पूर्ण होती है।

(1) अदितिवन को द्वैतवन भी कहा गया है क्योंकि यहां के जलवायु से द्वेषभाव मिट जाता है। जब युधिष्ठिर ने माद्री पुत्र को जीवित करने की मांग की उस समय यक्ष ने द्वैतभाव से प्रसन्न होकर चारों पाण्डव जीवित किए।

(2) जब अदिति माता की विष्णु भगवान के चक्र सुदर्शन ने हिमालय में अग्नि से रक्षा की तब अदिति ने सौक के पुत्रों के

प्रति इसी द्वैतभाव के कारण विष्णु भगवान को प्रसन्न किया था और बली को पाताल पहुचाया था।

पाण्डव विशेष रुप से इसी क्षेत्र में घूमते रहे और यहां के असुरों का भीम ने संहार किया। इसलिए इस इलाके को धर्मराज युधिष्ठिर का विजित क्षेत्र होने के नाते 'धर्मक्षेत्र' अर्थात् धर्मराज युधिष्ठिर का इलाका बताया गया है।

वेदों में भी अदिति माता की प्रशंसा लिखी है।

श्लोक :—अदिति माता, अदिति पिता।
अदिति पृथ्वी, अन्तरिक्षम्वं॥

(यजुर्वेद)

देवताओं का इस स्थान के प्रति आदर

अदिति माता ने अपने देव-पुत्रों का यज्ञ भाग का पुनः अधिकारी बनाया तथा राजाबली से पराजित देवताओं को पुनः स्वर्ग दिलाया, इस मातृ प्रेम का देवताओं ने अदिति सूर्यकुंड का विशेष मान बढ़ाया और तीनों लोकों में इसका मान बढ़ाने के लिए इस स्थान पर अर्जित पुण्य की रक्षा के लिए, जिससे भक्तों को कलिकाल में भी पूर्ण सिद्धि तथा फल की प्राप्ति हो और असुर यहां कृत पुण्य को विफल न कर सके, इस प्रकार इस स्थान को नियन्त्रित किया। भाद्रपद मास में भक्तों को सरलता से सिद्धि प्राप्ति के निमित्त पंचमी, षष्ठी, और सप्तमी को नियुक्त किया, जिसका वर्णन पुस्तक में "भाद्रपद शुक्ला षष्ठीफल" के रुप में लिखा जाएगा।

(विष्णु पुराण सूर्यसंदर्भ प्रसंग, पृष्ठ 177 कल्याण अंक)

Scanned by CamScanner

अदिति माता का परिचय

(ब्रह्मपुराण सूर्यसंदर्भ, पृष्ठ 159)

मुनियों ने ब्रह्मा जी से पूछा कि सूर्य भगवान का जन्म किस स्त्री से हुआ ?

ब्रह्मा जी बोले कि दक्ष प्रजापिता की साठ कन्याएं थीं। उनके अदिति, दिति, दनु और विनता आदि नाम थे। उनमें से तेरह कन्याएं, कश्यप जी से विवाही गईं।

अदिति ने तीनों लोकों के स्वामी देवताओं को जन्म दिया। दिति से दैत्य और दनु से बलाभिमानी भंयकर क्रोधी दानव पैदा हुए। विनता आदि अन्य स्त्रियों से स्थावर, जंगम विष तथा भूतों की उत्पत्ति हुई। इन दक्ष सुताओं के पुत्र, पौत्र और दौहित्र आदि से सम्पूर्ण जगत व्याप्त हो गया।

कश्यप के पुत्रों में देवता प्रधान हैं, वे सात्विक गुणों से युक्त हैं। इनके अतिरिक्त दैत्य आदि राजस और तामस गुण वाले हैं। देवताओं को यज्ञ का भागी बनाया। दैत्य और दानव उनसे शत्रुता रखने लगे और मिलकर देवताओं को कष्ट पहुंचाने लगे तथा यज्ञ भाग भी उनसे छीन लिया गया।

माता अदिति ने देखा कि दैत्य और दानवों ने मेरे पुत्रों को उचित स्थान से हटा दिया है और सारी त्रिलोकी नष्ट प्राय कर दी है तब वह भगवान सूर्य की अराधना के लिए, एकाग्रचित् होकर स्तवन् करने लगी। भगवान सूर्य प्रसन्न हुए और 'मार्तण्ड'

नाम से अदिति-गर्भ से उत्पन्न होने का वचन अदिति माता को दिया। इसी अदिति आश्रम में इसी सूर्यकुंड पर अदिति ने तपस्या की थी और सूर्य के जन्म स्थान होने के कारण ही सूर्यकुंड पवित्र धाम बना। 'मार्तण्ड' नामक सूर्य ने असुरों का संहार किया और माता की कृपा से देवताओं को फिर से यज्ञ भाग मिलने लगा।

भगवान वामन का जन्म और अदिति तप

(संक्षिप्त नारद पुराण, पृष्ठ 43)

दिति के पुत्रों में आदि दैत्य हिरण्यकशिपु बड़ा ही बलवान था। उनके पुत्र प्रह्लाद हुए, जो दैत्यों में बड़े भारी सन्त थे। प्रह्लाद के पुत्र विरोचन ब्राह्मणों के भक्त थे। उनके पुत्र का नाम राजा बलि था। ये अत्यन्त तेजस्वी और प्रतापी थे। ये ही दैत्यों के सेनापति बने। इन्होंने बड़ी भारी सेना लेकर समस्त पृथ्वी को जीत लिया, अन्त में स्वर्ग पर आक्रमण करके इन्द्रपुरी को अपने अधिकार में ले लिया। देवताओं के साथ वर्षों तक युद्ध होता रहा और अन्त में देवता हार गए और उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया गया।

देवता लोग पृथ्वी पर छुप-2 कर अपना जीवन बिताने लगे और दैत्य लोग पृथ्वी तथा स्वर्ग के सभी ऐश्वय भोगने लगे। राजा बलि भगवान नारायण की शरण लेकर अव्याहत ऐश्वर्य तथा बढ़ी हुई लक्ष्मी के बल से त्रिभुवन का राज्य भोगने लगे। उन्होंने विष्णु भगवान की प्रीति में तत्पर होकर अनेक "अश्वमेध"

यज्ञ किए। बलि स्वर्ग में रहकर इन्द्र और दिक्पाल दोनों पदों का उपभोग करने लगे।

अदिति माता अपने देव पुत्रों की दीन दशा देखकर बड़ी दुःखी हुई। उन्होंने यह सोचकर कि मेरा यहां रहना व्यर्थ है, ऐसा न हो कि दैत्य लोग समस्त अदितिवन में आग लगा दें और सभी ऋषि मुनियों को कष्ट पहुंचे। यह विचार कर उन्होंने अदितिवन को छोड़ दिया और हिमालय में जाकर तपस्या आरम्भ कर दी।

वह इन्द्र का ऐश्वर्य और दैत्यों की पराजय चाहती थी। विष्णु भगवान को प्रसन्न करने के लिए कठोर साधना में लग गई। कुछ काल तक निरन्तर बैठी रही, फिर दीर्घकाल तक दोनों पैरों पर खड़ी होकर तपने लगी। अन्त में एक पैर पर, फिर पैर की उंगलियों के सहारे खड़ी होकर कठोर तपस्या करने लगी। परन्तु भगवान विष्णु प्रसन्न नहीं हुए, तब उन्होंने फलाहार आरम्भ कर दिया फिर केवल पत्तों पर निर्वाह करने लगी। कितना त्याग, कितना पुत्रों के प्रति माता का प्यार धन्य है उस अदिति माता को, अब तो खानपान समस्त बन्द कर दिया और जल पर ही जीवन पलने लगा। अन्त में जल का परित्याग बन्द करके केवल वायु ही सेवन करने लगी। कुछ समय के उपरान्त वायु का भी अवरोध कर दिया और अन्तःकरण द्वारा सच्चिदानन्द-घन परमात्मा के ध्यान में, एक हजार दिव्य वर्षों तक तपस्या में लगी रही।

दैत्यों ने अदिति का ध्यान विचलित करने के लिए, अपनी दाढ़ों के अग्रभाग से अग्नि प्रकट करके क्षण भर में समस्त बन को

जला दिया और दैत्य भी साथ ही भस्म हो गए, केवल अदिति माता ही बच सकी क्योंकि विष्णु भगवान का चक्र सुदर्शन उन की रक्षा कर रहा था।

अब विष्णु भगवान प्रसन्न हो गए और कमल नेत्र, प्रसन्न वदन, शंख, चक्र, गदाधारी, वैजन्तीमाला धारी चतुर्भुज रुप में अदिति को दर्शन दिए। उनके मुख पर मन्द-मन्द मुस्कान थी। उन्होंने अपने पवित्र हाथों से कश्यप की प्यारी पत्नी अदिति का स्पर्श करते हुए कहा—देवमाता ! तुमने तपस्या द्वारा मेरी अराधना की है। मैं प्रसन्न हूं। रुचि के अनुसार वर मांगों "मैं अवश्य दूंगा", भद्रे भय न करो, महाभागे, तुम्हारा कल्याण अवश्य होगा। ऐसा सुनकर देवमाता अदिति ने उनके चरणों में प्रणाम किया और उनकी स्तुति करने लगी।

हे जनार्दन ! दैत्यों द्वारा सताए हुए मेरे पुत्रों की रक्षा कीजिए। उनकी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी, उनका समस्त वक्षस्थल भीग रहा था, हे देवेश्वर ! मैं दैत्यों से पीड़ित हो रही हूं। मेरे पुत्र मेरी रक्षा करने में असमर्थ हैं, मैं दैत्यों का वध भी नहीं चाहती क्योंकि वह भी मेरे ही पुत्र हैं। सुरेश्वर ! उन दैत्यों को मारे बिना ही मेरे पुत्रों को सम्पत्ति दे दीजिए। ब्रह्मा ने कहा कि हे नारद जी ! अदिति के ऐसा कहने पर देव-देवेश्वर विष्णु पुनः प्रसन्न हुए और बोले देवी मै प्रसन्न हूं, मैं स्वयं तुम्हारा "वामन रुप में पुत्र बनकर आऊंगा" क्योंकि तुमने सौत के पुत्रों पर इतना वात्सल्य, तुम्हारे सिवाए अन्यत्र दुलर्भ है। तुमने जो मेरी स्तुति की है, उसे जो मनुष्य पढ़ेंगे, उन्हें श्रेष्ठ सम्पत्ति प्राप्त होगी। उनके पुत्र कभी हीन दशा में नहीं पड़ेंगे।

ऐसा कहकर भगवान विष्णु ने अपने कण्ठ की माला उतार कर अदिति के गले में पहनाई। तदनन्तर दक्षकुमारी देवमाता

Scanned by CamScanner

अदिति ने प्रसन्न चित्त होकर भगवान विष्णु को प्रणाम किया और अपने स्थान अदितिवन को लौट आई। समय आने पर वामन भगवान का जन्म हुआ। जिन्होंने तीन पग भूमि राजा बलि से मांग कर बलि को रसातल में भेज दिया और स्वयं भक्त बलि के वचनों के वशीभूत होकर बलि के द्वारपाल होकर रहने लगे। देवताओं को अभय दान देकर स्वर्ग का राज्य दे दिया।

महाभारत युद्ध से पूर्व अदितिवन में पांडव

(महाभारत से)

जिस समय भगवान कृष्ण का "शान्ति प्रयत्न" कौरव सभा में निष्फल हो गया तब वे पांडव सभा में आए और युद्ध की घोषणा कर दी गई, यह सब वृतान्त महाराज युधिष्ठिर से सुनाया। प्रस्ताव रखा कि युद्ध के लिए "कौन-सा स्थान उचित रहेगा"।

भगवान कृष्ण बोले कि हे युधिष्ठिर ! ऋषि मुनियों ने कुरुक्षेत्र भूमि को बहुत ही पवित्र तथा पुण्यप्रद स्थान बताया है, श्रुतियों का प्रमाण देते हुए उन्होंने कहा कि :—

श्लोक :—गंगायां जले मुक्ति-वारणस्यां जले, स्थले।
कुरुक्षेत्रे त्रिधा मुक्ति-अन्तरिक्षे, जले, स्थले॥

अर्थ—गंगा के जल में प्राण त्यागने से मुक्ति होती है। और काशी में जल तथा भूमि पर प्राण त्यागने से मुक्ति होती है,

परन्तु कुरुक्षेत्र भूमि में प्राण त्यागने से अन्तरिक्ष जल और स्थल तीनों दशा में प्राणी की मुक्ति हो जाती है।

हे ! युधिष्ठिर मैंने धर्म की वृद्धि हेतु दुष्टों का संहार करके उन्हें मुक्ति द्वारा धर्मानुयायी बनाना है। इसलिए कुरुक्षेत्र भूमि ही युद्धक्षेत्र बनना चाहिए। तपोभूमि होने के कारण यहां के कण-कण में सत्य का आभास होता है और निर्णय देने वाला इससे बढ़कर उत्तम स्थान पृथ्वी पर और कोई नहीं हो सकता।

इस बात को सुनकर युधिष्ठिर महाराज बोले कि हे प्रभु! कुरुक्षेत्र भूमि बहुत ही सुन्दर और पवित्र भूमि है, हमने जो कुछ अनुभव द्वारा यहां से प्राप्त किया, उसका वर्णन इस प्रकार है— युधिष्ठिर कहने लगे कि जब हम पांचों भाई माता सहित लाक्षा-गृह से बचकर जंगलों में घूमते हुए कुरुक्षेत्र भूमि के अन्तर्गत अदितिवन में पहुंचे तो रात्रि के समय माता कुन्ती को प्यास लगी, तब भीम रात को ही एक सरोवर से पानी लेने चल दिए।

हम सब एक वृक्ष के नीचे थकावट के कारण शीघ्र ही गहरी निद्रा में सो गए। कुछ देर में भीम पलाशपत्र के डोने में पानी लेकर आए; सबको गहरी नींद में सोया देखकर स्वयं रक्षा करने के लिए जागकर पहरा देने लगे। उन्होंने जान लिया कि यह वन हिंसक जन्तुओं और असुरों से भरपूर है। ये दुष्ट ऋषि-मुनियों की तपस्या में बाधा भी डालते होंगे, ऐसा न हो कि सोने वालों पर आक्रमण कर बैठें।

हिडम्ब और हिडम्बा का प्रसंग

कुछ ही समय बीता था कि "हिडम्ब" असुर जो इसी वन में रहता था अपनी बहिन "हिडम्बा" से कहने लगा कि जंगल से मानवों की गंध आ रही है, इसलिए जल्दी जाओ और मेरे लिए नर मांस लाओ, मुझे भूख लग रही है।

हिडम्बा गन्ध का अनुकरण करती हुई उसी वृक्ष के नीचे पहुंची जहां पर पांडव पुत्र माता सहित सो रहे थे। उसने जाते ही सोने वालों की हत्या करनी चाही परन्तु प्रहरी भीम ने तुरन्त उसे रोक दिया और युद्ध की गतिविधियों से उसे कुछ दूर ले गया, दोनों का युद्ध हुआ, हिडम्बा पराजित हो गई और भीमसेन के पांव पकड़कर कहने लगी मैं आपकी चरण सेविका बनना चाहती हूं, आज मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गई।

मैंने प्रण किया हुआ था कि जो मुझे युद्ध में हरा देगा वही मेरा पति होगा। इसलिए आपको यह कामना पूर्ण करनी होगी। भीम ने उत्तर दिया कि माता और भ्राताओं की अनुमति के बिना वह कभी भी यह कार्य नहीं कर सकता। हिडम्बा ने कहा कि मैं उन्हें स्वयं मना लूंगी।

ऐसा निश्चय करके दोनों उसी वृक्ष के नीचे आ गए, जहां कुन्ती माता, भ्राताओं सहित सो रही थी। हिडम्बा ने कुन्ती को पंखा झलना आरम्भ कर दिया, जब कुन्ती की आंख खुली तो हिडम्बा ने उसके पांव पकड़ लिए। कुन्ती ने प्रसन्न होकर "सौभाग्यवती हो" ऐसा आशीर्वाद दिया जिसे सुनकर हिडम्बा प्रसन्न हो गई और कुन्ती से विवाह की आज्ञा प्राप्त कर ली, सभी भाईयों ने भी आज्ञा दे दी।

तब हिडम्बा और भीम का गन्धर्व विवाह हो गया। हिडम्बा ने प्रतिज्ञा की कि एक पुत्र सन्तान होने तक वह उन्हीं के साथ रहेगी और फिर पुत्र को लेकर अपने पिता के घर चली जाएगी। जब भी आप याद करेंगे उसी समय उपस्थित होकर पुत्र सहित पाडवों की सहायता करेगी।

यह स्थान अब भी "चौरी डाबर" के नाम से प्रसिद्ध है और लोगों से सुना जाता है कि यहां, भीम, हिडम्बा का गन्धर्व विवाह हुआ था। जिस कुण्ड से रात्रि समय भीम पानी ले गया था, वह यही सूर्यकुण्ड सरोवर था जिस पर यक्ष का पहरा रहता था। मगर भीम किस होशियारी से पानी ले गया—इस बात का यक्ष को पश्चाताप हुआ और उनके बल, परीक्षा तथा बुद्धि का अनुमान लगाने के लिए समय की प्रतीक्षा करने लगा।

हिडम्ब की मृत्यु

भूखा हिडम्ब असुर बहिन हिडम्बा के न लौटने पर क्रोधित होकर उसी दिशा में चल दिया और हिडम्बा बहिन को मानव जाति में प्रसन्न देख क्रोधित हो गया और मारने के लिए प्रहार कर दिया परन्तु भीम ने हिडम्बा की रक्षा की और हिडम्ब असुर को मार डाला।

हिडम्ब असुर का स्थान अब तक अमीन गांव के समीप "ढिब्बा" नाम से प्रसिद्ध है।

दोहा :—खण्ड-खण्ड होकर गिरा भू पर जब उदण्ड।
उदयाचल से उदय हुआ, तभी विजय मार्तण्ड॥

(महाभारत राधेश्याम)

Scanned by CamScanner

इस विजय से पांडवों का यश बढ़ने लगा और वे "कोह" नामक स्थान पर जोकि काफी ऊँचे टीले हैं, आज भी उनके चिन्ह विद्यमान हैं और लोगों से सुना भी जाता है कि इस स्थान पर पाण्डवों ने विश्राम किया था। उन्होंने यहां एक गुफा तैयार की और उसमें एक वर्ष तक निवास किया। इस स्थान पर हिडम्बा से "घटोत्कच" पुत्र का जन्म हुआ जो बड़ा ही बलवान और मायावी विद्याओं से भरपूर था। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार हिडम्बा घटोत्कच का लेकर विदा हो गई।

चक्रापुरी का वर्णन, पांडवों का प्रवेश

हिडम्बा के चले जाने के बाद पांडव उदास रहने लगे अतः उस स्थान को छोड़ने का निश्चय कर लिया। वे योजना बना ही रहे थे कि अब कहां जाना है, तभी वेदव्यास जी प्रकट होते हैं और उन्हें समीप वाली नगरी, जिसका नाम चक्रापुरी था और अब अमीन गांव के नाम से प्रसिद्ध है, उसमें ठहरने का सुझाव देकर चले गए।

पांडव चक्रापुरी नगरी में एक ब्राह्मण परिवार के साथ अतिथि की भान्ति रहने लगे। स्वस्तिक चक्रापुरी नगरी उन दिनों साकेत को मात कर रही थी। इस नगरी के पूर्व की ओर एक सुन्दर सरोवर सूर्यकुण्ड था, कुन्ती प्रतिदिन उस सरोवर में स्नान करने जाती थी।

ब्राह्मण परिवार सचमुच एक देवस्थान था। पांडव यहां रह कर प्रसन्न हुए। एक दिन ब्राह्मण परिवार में रोने-धोने की आवाज आई, जिसे सुनकर माता कुन्ती ने कारण पूछा। ब्राह्मण

ने कहा कि इस नगरी का राजा बड़ा निर्बल है, उसने अपनी सहायता के लिए "बक" नामी असुर को बुलाया था—अब वह असुर इस नगरी को स्वयं प्राप्त करना चाहता है। राजा ने एक भेंट प्रतिदिन भेजने का वायदा करके उसे सहमत किया हुआ है।

आज मेरे घर की बारी है। इसलिए मेरे भेंट रूप में जाने से सारा परिवार दुःख मान रहा है। कुन्ती बोली आप चिन्ता न करें। मेरे पांच बेटे हैं, मैं उनमें से एक को भेंट के रुप में भेज दूंगी, और अपने जीते जी ब्राह्मण परिवार को कष्ट न होने दूंगी। यह बात सुनकर सभी परिवार वाले कुन्ती के उत्तम चरित्र और साहस की सराहना करने लगे।

बकासुर का वध

कुन्ती ने भीम को भेंट के लिए भेज दिया। भीम के साथ बकासुर का युद्ध हुआ। अन्त में भीम ने उसे मार दिया और चक्रापुरी नगरी को प्रतिदिन भेंट देने के कष्ट से मुक्त करा दिया। यह स्थान आज भी "बड़थल" नाम से प्रसिद्ध है और "दाने की चौंकी" का चिन्ह अब तक लोगों से जाना जाता है। वहां एक सरोवर है, मन्दिर है, यात्री लोग बड़ी श्रद्धा से सरोवर में स्नान करते हैं और उस कुंड की मिट्टी को शरीर पर मलना अधिक अच्छा समझते हैं।

जब चक्रापुरी के राजा को "बकासुर" वध का समाचार मिला, वह बहुत ही प्रसन्न हुआ और भीम की वीरता से प्रसन्न होकर उसे पारितोषिक देना चाहा परन्तु भीम ने लेने से इन्कार

कर दिया, तब राजा ने पांडव प्रभुत्व स्वीकार किया और समय पर सहायता देने की प्रतिज्ञा की।

इस घटना के उपरान्त वेदव्यास जी पांडवों को पांचाल देश जाने का सुझाव देते हैं। पांडव आज्ञा पाकर पांचाल देश को चल देते हैं। गंगातट पहुंचकर रात्रि के समय गन्धर्वों से अर्जुन का युद्ध होता हैं। गन्धर्वराज अर्जुन की वीरता से प्रसन्न होकर उसे "चाक्षुष्य" शक्ति देते हैं और कहते हैं कि आप इस शक्ति की सहायता से द्रोपदी स्वयंम्बर में विजयी होंगे परन्तु याद रखना ब्राह्मण के बिना अकेले रात्रि में कभी यात्रा न करना। यहां पास के नगर में "धौम्य" का आश्रम है, उनके पास जाओ। उन्हें अपना पुरोहित नियुक्त करो, तब तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा।

गन्धर्वराज से विदा लेकर पांडव ब्राह्मण वेष में द्रोपदी स्वयंबर में पहुंचे। यहीं पर भगवान कृष्ण से उनकी मित्रता हुई और उन्हीं की सहायता से उन्होंने कौरवों को नीचा दिखा कर द्रौपदी को प्राप्त किया। कृष्ण ने द्रौपदी को बहिन कह कर पुकारा और उसका नाम कृष्णा रक्खा।

जब धृतराष्ट्र को यह पता चला कि पांडव जीवित हैं, लाक्षागृह में जले नहीं और यादव कृष्ण उनका सम्बन्धियों में माना गया है तो उन्होंने पांडवों को बुलाकर उनका आधा राज्य अर्थात् "खाण्डवप्रस्थ" का इलाका उनको दे दिया।

खाण्डवप्रस्थ में पांडव

खाण्डवप्रस्थ का राज्य पाकर पांडव प्रसन्न हुए और धर्म नीति के अनुसार प्रजा का पालन करने लगे। अब उनका समय सुख से बीत रहा था।

एक दिन रात्रि के समय एक ब्राह्मण अर्जुन के पास आया और कहने लगा, महाराज मेरी रक्षा करो, मैं बहुत दुखी हूं। चोर मेरी गाय चुराकर ले जा रहे हैं, आप मेरी सहायता कीजिए। यह सुनकर अर्जुन चिन्ता में पड़ गए और सोचने लगे कि सभी शस्त्र शयनागृह में रक्खे हैं और आज वहां महाराज युधिष्ठिर विश्राम कर रहे हैं। यदि उन्हें जगाता हूं तो "बारह वर्ष" तपोवन जाना पड़ेगा, यदि ऐसा न करूं तो ब्राह्मण की सहायता में असमर्थ हूं। शीघ्र ही वन जाने वाली कठिनाई उचित समझी और शस्त्र लेकर नियम को भंग किया परन्तु ब्राह्मण की गाय को चोरों से छुड़ाकर, उसका आशीर्वाद प्राप्त किया।

प्रातःकाल होते ही अर्जुन वन जाने की तैयारी करने लगे। सभी ने आश्चर्य से पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहे हैं, जबकि किसी ने उनको नियम भंग करने का आरोप नहीं लगाया। अर्जुन ने किसी का कहना न माना और नियम उलंघन का प्रायश्चित करने के लिए तपस्वी वस्त्र धारण किए और वन यात्रा को चल दिए।

सबसे पहले अर्जुन मणिपुर पहुंचे और वहां चित्रांगदा से विवाह किया जिससे "बब्रूवाहन" वीर पुत्र का जन्म हुआ। वहां से पंचतीर्थों में पहुंच कर 'वर्गा' नामक अप्सरा का उद्धार किया। मणिपुर से प्रभास तीर्थ पर गए, जहां पर उन्हें भगवान

Scanned by CamScanner

कृष्ण मिलने के लिये आए। "रैवतक पर्वत" पर निवास करने के उपरान्त अर्जुन कृष्ण जी के साथ द्वारका चले गए। वहां सुभद्रा से उनका विवाह हुआ।

इस प्रकार अर्जुन बारह वर्ष पूरे करके सकुशल 'खाण्डव-प्रस्थ' पहुंच गए। धर्मराज युधिष्ठिर ने प्रसन्न होकर "राजसूर्य यज्ञ" किया। पांडवों का यश बढ़ता हुआ देश के कोने-2 तक पहुंच गया और उनकी मान प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई।

द्यूत का खेल

पांडवों की बढ़ती हुई मान प्रतिष्ठा को दुर्योधन सहन न कर सका। कुटिल नीति से युधिष्ठिर को द्यूत खेल में फंसा लिया और सारा राजपाट छीन लिया, द्रोपदी सहित भाईयों को भी पासों के खेल में हरा दिया। दुर्योधन ने द्रौपदी से व्यंग्य का बदला लेने की इच्छा से उसे सभा में नग्न करने का प्रयास किया। भगवान कृष्ण ने द्रोपदी का चीर बढ़ाकर रक्षा की और लज्जा बचाई। इससे कौरवों का मार्दन हुआ।

द्रोपदी के सतीत्व से प्रसन्न होकर धृतराष्ट्र से भीष्म ने विजित राज्य वापिस करा दिया। दुर्योधन को यह बात पसन्द नहीं आई, वह उदास रहने लगा। शकुनी ने दोबारा द्यूत का षड़यन्त्र रचवाया और पांडवों को राज्य से हीन कर दिया, "तेरह वर्ष का बनवास" निश्चित किया गया, जिसमें बारह वर्ष प्रकट और तेरहवां वर्ष अज्ञात दशा में बिताना होगा। यदि पहचान लिए गए तो फिर दोबारा इसी प्रकार बनवास भोगना पड़ेगा। ऐसा कहकर दुर्योधन ने उनको देश निकाला दे दिया।

कृष्ण जी ने पांडवों को द्वारका में रहने को कहा। परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। तब कृष्ण जी सुभद्रा और अभिमन्यु को साथ लेकर द्वारका चले गए।

पांडव बनवास

पांडव बन भ्रमण के लिए आपस में विचार करने लगे :—
महाभारत (अ० 82)

श्लोक : वैश्म्पायनोवाचः ततस्तेषु प्रयातेषु, कौन्तेय सत्य संगरः।
अभ्य भाषत् धर्मात्मा भ्रातृनसर्वान् युधिष्ठिरः॥

अर्थ :—वैश्म्पायन जी कहते हैं कि हे जनमेजय! भगवान कृष्ण के विदा होने पर धर्म युधिष्ठिर अपने भाईयों से कहने लगे कि :—

श्लोक :—द्वादशेतानि वर्षाणि वस्तव्य निर्जने वने।
समीक्षध्वं महारण्ये देशं बहुमृगद्विजम्
बहु पुष्प फलं रम्यं, शिवं पुण्य जनावृतम्।
यत्रेमाः शरदः सर्वा, सुखं प्रति वसे महि॥

अर्थ बारह वर्ष तक हमने वन में रहना है, इस लिए कोई ऐसा स्थान निश्चित करो जहां मृग और ब्राह्मण निवास करते हों। साथ ही उस स्थान पर बहुत से फल और पुष्प भी मिलते हों, शिव की भक्ति करने वाले लोग बसते हों। जहां पर ये वस्तुएँ उपलब्ध हों, वहां सदैव शरद पूर्णिमा की भान्ति लोग पृथ्वी पर सुख से बसते हैं।

अर्जुनोवाचः :—इदं द्वैतवनं नाम सरः पुण्य जलोचितम्।
बहु पुष्प फलं रम्यं, नाना द्विज निषेवितुम॥
अत्रेमा द्वादश समा, विहरेमेति रोचये।
यदि तेऽनुमतं राजन्, किमन्यन्मन्यते भवान्॥

अर्थ :—अर्जुन कहने लगे :—यह तो द्वैतवन ही उचित स्थान है, जहां पर पुण्यजल का सरोवर है। बहुत से फल और पुष्प वहां उत्पन्न होते हैं और तपस्वी ब्राह्मणों का निवास उसी स्थान पर है। मेरी तो यही इच्छा है कि बारह वर्ष इसी द्वैतवन में निवास करें या आप किसी अन्य स्थान को उत्तम मानते हैं, तो वह बता दीजिए।

युधिष्ठिरोवाच :—ममाप्येतन्मते पार्थ, त्वयायत् समुदाहृतम्।
गच्छामः पुण्य विख्यातं, महद द्वैतवनं सरः॥

अर्थ :—हे पार्थः :—जैसा तुमने बताया, वैसा ही मेरा मत है। हम लोग पवित्र जल के कारण, प्रसिद्ध विशाल द्वैतवन के सरोवर पर चलें।

श्लोक :—तमाल, तालाम्र, मधूक, नीप।
कदम्ब, सर्जार्जुन, कर्णिकारः॥

तपात्यये पुष्प धरैरूपेतं।
महावनं राष्ट्रपतिर्ददर्श॥

अर्थ :—पांडवों ने अदिति वन जिसकी बराबरी करने वाला और कोई वन नहीं है अर्थात् यह अद्वितीय वन प्राकृतिक शोभा से पूर्ण है। इस वन में पांडवों सहित महाराजा युधिष्ठिर ने तमाल, ताल, आम्र, महुआ, नीम, कदम्ब, साल, अर्जुन और कनेर आदि वृक्ष तथा पादपों को

देखा। ऐसा प्रतीत होता था कि यह वृक्ष भी तपस्वियों की भान्ति ग्रीष्म ऋतु की कठिन धूप सहने के उपरान्त फूलों और फलों से सम्पन्न हो जाते हैं।

श्लोक :—महाद्रुमाणां शिखरेषु तस्थुः।
मनोरमां वाचमुदीरयन्तः॥

मयूर दात्यूह चकोर संघा।
तस्मिन वने, बर्हिण कोकिलाश्च॥

अर्थ : वृक्षों की उंची शिखरों पर, मयूर, चातक, चकोर, बर्हिण तथा कोयल आदि मन को मीठी बोली से प्रसन्न करने वाले सुन्दर श्रेष्ठ पक्षियों को देखा।

श्लोक :—करेणु युथैः सह यूथपानां।
मदोत्कटा नामचल प्रभाणाम्॥

महान्ति यूथानि महाद्विपानां।
तस्मिन् वने राष्ट्रपतिर्ददर्श॥

अर्थ :—महाराज युधिष्ठिर ने जोड़े के साथ विचरते हुए हाथियों के झुंडों की शोभा को देखा।

श्लोक :—मनोरमां भोगवतीं सुपेत्य।
पूतात्मना चीर जटा धराणाम्।

तस्मिन् वने धर्मभृतां निवासे।
ददर्श सिद्धर्षिगणनेकान्॥

अर्थ :—जीवन के भोगों का त्याग करके जिनकी आत्मा पवित्र हो गई है, ऐसे वल्कल वस्त्र तथा जटाधारी सिद्धों और ऋषियों के समूहों से शोभित इस धर्मारण्य को देखा।

Scanned by CamScanner

श्लोक :—ततः स यानादवरुह्य राजा ।
सभ्रातृकः सजनः काननं तत् ॥
विवेश धर्मात्मवतां वरिष्ठ ।
त्रिविष्टपं शक्र इवामितौजाः ॥

अर्थ :—इन भ्राताओं सहित राजा युधिष्ठिर रथ से उतर कर वन के धर्मात्माओं को अपने परिवार के सदस्य समझकर इन्द्रपुरी के समान, इस त्रिविष्टप अदितिवन में प्रविष्ट हो गए।

ताम्रपात्र की प्राप्ति

पांडव दूसरों को भोजन खिलाकर फिर आप खाया करते थे, यह उनका नित्यकर्म था। वन में इस नित्यकर्म का निभाना कठिन प्रतीत होने लगा। तब धौम्य ऋषि ने अदितिवन स्थित सूर्यकुंड पर सूर्य की अराधना करने को कहा। महाराज युधिष्ठिर ने आज्ञा का पालन किया। उनकी तपस्या सफल हुई और भगवान सूर्य प्रसन्न हुए। युधिष्ठिर को "ताम्रपात्र" देकर कहा कि द्रोपदी अपने हाथ से भोजन इस पात्र से निकाल कर असंख्य प्राणियों को खिला सकती है, तब भी पात्र में भोजन की कमी नहीं होगी। इस वरदान को पाकर पांडव वन में भी राज्य जैसा सुख अनुभव करने लगे।

कीर्मीर राक्षस का वध

एक दिन धौम्य ऋषि के संग पांडव काम्यवन में पहुंचे। वहां "कीर्मीर" नामक राक्षस रहता था उसने पांडवों पर प्रहार किया, भीम ने आगे बढ़कर उसके साथ युद्ध किया और अन्त में उसका वध कर दिया। यह स्थान भी धाम माना जाता है "किरमच" ग्राम में 'कुलतारन' नामक तीर्थ है, श्राद्धों की पूर्णिमा को यहां पर भारी मेला लगता है। इस स्थान की यात्रा और तीर्थ में स्नान करने से पितरदेव प्रसन्न हो जाते हैं। कुल की वृद्धि होती है। ब्रह्मभोज से, पितृपक्ष तर्पण से "गया" धाम के समान फल की प्राप्ति होती है और अन्त में पितृलोक प्राप्त होता है। परिवारों में पितर पीड़ा दूर करने के लिए यह स्थान उत्तम माना गया है।

कीर्मीर असुर पर विजय की बधाई देने के लिए भगवान कृष्ण अन्य राजाओं सहित भीम के यश का गान करते हुए, पांडवों से काम्यवन में ही मिले। इस स्थान का वर्तमान नाम अब "कमोदा" है। यहां भी सुन्दर सरोवर है, मन्दिर है। सूर्यसप्तमी रविवार को पर्व तिथि मानकर स्नान का फल जीवन में सफलता देने वाली शक्ति को प्रदान करता है। किसी बाल हत्या का प्रायश्चित दूर करने के लिए यहां के स्नान से मन को शान्ति होती है और पाप दूर हो जाता है।

इस वन में गुरु द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा जो अमर माने जाते हैं इसी स्थान पर भ्रमण करते हुए, इस कलिकाल में भी ग्वालों द्वारा जंगल में देखे जाते हैं। उनके हाथ में तेलपात्र होता है। दीन मलीन वेशधारी मौन रूप में उदास, मस्तक पर तेल की पट्टा बंधी हुई दिखाई देती है। मानव के समीप पहुंचने पर अदृश्य हो जाते हैं। ऐसा कभी-2 होता है। उनको इसी वन में शान्ति मिलती है।

मार्कण्डेय का आगमन

यहां से पांडव "कुरुजांगल" देश में पहुंचे। यहां की जनता पांडवों के प्रति श्रद्धा और प्रेमभाव दिखाने लगी। उन्होंने दुर्योधन के शासन की निन्दा की। भीम ने उन्हें समझाया कि वह तो तेरह वर्ष के बाद ही कुछ सहयोग दे सकेंगे।

द्वैतवन में लौट आने पर यहां के मूल निवासी 'कौल भिल्ल' पांडवों की उदारता से उनके अनुयायी बन गए। एक दिन वकदालभ्य सुत जिनका नाम मार्कण्डेय था, युधिष्ठिर से मिले और सुझाव दिया कि इन वनचरों द्वारा दुर्योधन की कुटिल नीति का भी पता मंगाते रहा करें, यह सुनते ही हस्तिनापुर का सारा समाचार गुप्तचरों से मंगाया गया। उन्होंने बताया कि पांडवों का प्रेम लोगों के दिलों से दूर करने के लिए दुर्योधन ने जनता को सुखी बनाने में इन्द्र को भी मात कर रखा है।

पांडव इस समाचार से बड़े दुःखी हुए और वे युद्ध के लिए, तैयार हो गए। तुरन्त ही वेदव्यास जी आ जाते हैं और युद्ध के विचार को बदल देते हैं। उन्होंने बताया कि जब तक दिव्यास्त्रों की प्राप्ति नहीं होगी, तब तक जय पाना कठिन है। इसलिए अर्जुन जाए और "इन्द्रकीलक" पर्वत पर तपस्या करके "सुरेश्वर" को प्रसन्न करे। उन्होंने महेश्वर मन्त्र बता दिया और अर्जुन जाने के लिए तैयार हो गए। द्रोपदी ने उन्हें पाथेय (रास्ते का भोजन) दिया और कहा कि इन्द्र द्वारा भेजी गई अप्सराओं से सावधान रहना। वे तपस्या भंग करने का प्रयास करती हैं। "मुझे भी याद न करना" तब तपस्या सफल होगी। मुनि ने एक यक्ष रास्ता बताने के लिए अर्जुन के साथ भेज दिया।

इन्द्रकीलक पर्वत

हिमालय पर पहुंच कर यक्ष ने अर्जुन को गंगा के निकलने का स्थान दिखाया और कहा कि ब्रह्म प्राप्ति के लिए यहीं पर सिद्धि प्राप्त होती है। शंकर जी ने वेद विधि से इसी स्थान पर "गौरी" से विवाह किया था। मद्राचल पर्वत इसी का एक किनारा है, इसी के ऊंचे शिखर भाग को "कैलाश" पर्वत कहा जाता है। मानसरोवर शतदल कमल इसी स्थान पर उगता है। कुबेर जी ने "अलकापुरी" तथा शंकर जी को प्रसन्न करने के लिए "शिव प्रतिमा माधुरी" प्रथम बार इसी स्थान पर बनाई थी। और वह सामने "इन्द्रकीलक" पर्वत है, बस वहीं पहुंच कर सावधान होकर तप करो। यह कह कर यक्ष विदा हुए। अर्जुन तपस्या में लीन हो गए। इन्द्र ने अप्सराओं को तपस्या भंग करने के लिए भेजा परन्तु अर्जुन विचलित न हुए।

इन्द्रदेव प्रसन्न हो गए तथा अर्जुन से कहने लगे कि जिस शक्ति की प्राप्ति के लिए तुम तप कर रहे हो, वह शिव की आज्ञा के बिना असम्भव है। अतः आप शिव की प्रसन्नता के लिए तप करें। अर्जन ने शिव की प्रसन्नता के लिए तपस्या आरम्भ कर दी।

मूक नामक दैत्य का वध

अर्जुन की घोर तपस्या से शंकर जी की समाधि टूट गई। क्या देखते हैं कि मूक नामक दैत्य शूकर का वेष बनाकर अर्जुन का वध करने के लिए दौड़ा आ रहा है।

Scanned by CamScanner

किरातार्जुन युद्ध

अपने भक्त अर्जुन की रक्षा करने के लिए और दानव का वध कराने के लिए तथा अर्जुन के बल की परीक्षा करने के लिए शंकर जी ने "किरातपति" का वेष बनाकर सेना सहित, अर्जुन को बचाने के लिए शूकर का पीछा किया परन्तु दैत्य ने शम्भु सेना को अपनी शक्ति से रास्ते में ही रोक दिया।

पहाड़ों को दाढ़ों से तोड़ता हुआ, गर्जना करता हुआ, शूकर आगे की ओर बढ़ा तो गर्जना के शब्द से अर्जुन की समाधि टूट गई। क्या देखते हैं कि एक भयंकर शूकर उसकी ओर बढ़ रहा है। और पिनाक पाए शंकर उसका पीछा कर रहे हैं।

अर्जुन ने शूकर को एक ही बाण से मार दिया। परन्तु उसी समय शंकर जी ने भी अपना बाण छोड़ा जो शूकर को पार करके भूमि में समा गया। अब यह कहना कठिन हो गया कि शूकर किस के बाण से मरा। अर्जुन अपना बाण उठाने के लिए शूकर के समीप आए तो किरात कहने लगे कि यह तो हमारे स्वामी का बाण है। तुम अपना बाण किसी दूसरी जगह ढूंढो। तुम इसको हाथ नहीं लगा सकते, यदि चाहो तो मांग कर ले सकते हो।

इस बात पर अर्जुन किरात सेना से भिड़ गए और उसे हरा दिया। यह सुनकर शंकर जी ने "स्वामिकार्तिक" को सेनापति बनाकर भेजा। परन्तु "तारकासुर" का विजयी स्कन्द अर्जुन को परास्त न कर सका।

तब शंकर स्वयं युद्ध करने के लिए आए। बड़ा घमसान युद्ध हुआ। इधर "पिनाक" था तो उधर "गाण्डीव" का चमत्कार। अर्जुन ने "सर्पास्त्र" छोड़ा तो शंकर जी ने 'गरुड़ास्त्र' का प्रयोग किया। जब अर्जुन ने "निद्रामोहकास्त्र" छोड़ा तो शंकर जो ने मस्तक में स्थित चन्द्रमा से "रश्मीपाशास्त्र" छोड़ दिया। अब अर्जुन रश्मीजाल में बन्ध गए और निरास्त्र हो गए। तब ताल ठोंक कर कहने लगे कि अभी मल्ल-युद्ध होगा। इस बात पर शंकर जी प्रसन्न हो गए। किरात वेष उतार कर शिव रुप धारण कर लिया। शंकर जी अर्जुन से बोले कि मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूं और वीरता से सन्तुष्ट हूं। लो! यह "पाशुपतअस्त्र" तुम्हें प्रदान करता हूं। सावधान होकर इसका प्रयोग करना। इतना कह कर शंकर जी अन्तर्ध्यान हो गए। मालति संग अर्जुन सुरपुर में पहुंचे, गन्धर्वों ने उनका स्वागत किया।

इन्द्रपुरी में अर्जुन की नपुंसकता

इन्द्र जी ने अपना आधा आसन अर्जुन को दे दिया। अर्जुन सुख से इन्द्रपुरी में रहने लगे। यहीं पर उन्होंने "बज्रेश्वर" से सारा आयुध-विधान सीखा। फिर देवों ने "कामशास्त्र" के लिए जोर दिया परन्तु अर्जुन ने द्रौपदी के वचनों का ध्यान किया और कामशास्त्र से जवाब दिया तब "उर्वशी" ने क्लीब होने का अर्जुन को शाप दे दिया। अर्जुन शाप से दुखी होने लगे तब इन्द्र ने उन्हें बताया कि यह "नपुंसकता" तुम्हें अज्ञातवास में लाभदायक सिद्ध होगी। एक वर्ष तक तुम्हें नारी वेष में रहना होगा, जिससे तुम्हें कोई कष्ट नहीं छू सकेगा। अर्जुन आनन्द से इन्द्रपुरी में रहने लगे।

कुरुजांगल देश में रहते हुए युधिष्ठिर अर्जुन के वापिस न आने की चिन्ता करने लगे। एक दिन उन्हें नारद मुनि मिले। युधिष्ठिर ने उन से चिन्ता दूर करने का उपाय पूछा। मुनि बोले हे युधिष्ठिर! चिन्ता दूर करने के लिए तीर्थों के महात्म्यम् का श्रवण करो और धौम्यादि ऋषियों के साथ देवस्थानों के दर्शन करो तभी आप की चिन्ता दूर होगी। युधिष्ठिर ने लोमष ब्रह्मर्षि को साथ लिया और भिन्न-भिन्न स्थानों की यात्रा करते हुए कैलाश पहुंच गए।

कैलाश के समीप ही सुबाहु राजा का राज्य था, वहां की प्रजा सुखी थी। इसलिए युधिष्ठिर, लोमष, नकुल, भीम, सहदेव, धौम्य और द्रोपदी आगे बढ़ने लगे, दैवयोग से एक स्थान पर ऐसा हिमपात हुआ कि नकुल और सहदेव का शरीर शिथिल हो गया। तब भीम ने उन्हें अपने कन्धे पर बिठा लिया और तुङ्गिन मार्ग पर चढ़ने लगे, थोड़ी दूर चलने पर द्रोपदी का शरीर शिथिल हो गया। तब वीर घटोत्कच को पांडवों ने याद किया और उस वीर ने आते ही सबको प्रणाम किया और अपनी पीठ पर सबको बिठा कर व्योम मार्ग से शैल यात्रा शीघ्र ही करा दी।

इसके उपरान्त पांडव "बदरीवन" में पहुंचे। वहां एक दिन वायु द्वारा उड़ाकर लाया गया "शतदल" कमल द्रोपदी ने देखा। भीम से द्रोपदी ने उसके जोड़े का दूसरा कमल लाने की इच्छा प्रकट की। भीम कमल की खोज में चल दिए। रास्ते में उनकी भेंट हनुमान से हुई। भीम ने हनुमान जी को प्रसन्न कर लिया, तब हनुमान जी ने उनको शतदल कमल मिलने का स्थान बता दिया और पूंछ हटाकर रास्ता भी दे दिया।

भीम ने शतदल कमल प्राप्त करने के लिए यक्षों के साथ युद्ध करना पड़ा। यक्षपति कुबेर प्रकट हुए और भीम की वीरता

से मुग्ध होकर यक्षों को सब रहस्य समझाया। भीम के बल की सब प्रशंसा करने लगे और उनका स्वागत किया।

भीम को ढूंढते हुए, युधिष्ठिरादि भ्रात भी वहीं आ पहुंचे फिर सब "बद्री आश्रम" को लौट आए। इसी स्थान पर भीम ने "जटासुर" का वध किया जो ब्राह्मण वेष में रह कर अनुचित कर्म करता था।

अब पांडवों ने नैऋत्य कोण को छोड़ दिया और "वृषपर्वाश्रम" में धौम्य, लोमष ऋषियों के संग "आष्टिषेण" मुनि से ज्ञान प्राप्त करने लगे। "गिरिमन्दर" पर्वत पर अर्जुन से इन की भेंट हुई। पाण्डवों ने तप किया और "आष्टिषेण" धाम में ही इन्होंने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली।

इसी स्थान पर गरुड़ जी ने, एक बड़े सर्प को पकड़ा, जिसके फत्कार से द्रौपदी डर गई। कारण जानने के लिए भीम ने पर्वत की चोटी पर चढ़ कर देखा तो यक्ष और राक्षसों का युद्ध हो रहा है। भीम ने क्रोध से बाण चढ़ा लिया और शत्रु डर कर भाग गए। जब कुबेर जी को इस घटना का पता चला तो वह भीम की सहानुभूति से प्रसन्न हुए और रथ को सजाकर भीम के स्वागत को आए, धर्मराज युधिष्ठिर ने सोचा कि कहीं कुबेर जी क्रुद्ध होकर आए हैं, वे क्षमा याचना से कुबेर जी से मिले। तब कुबेर जी ने बताया कि तुम चिन्ता न करो। यह तो सब कुछ भीम के बल की परीक्षा हेतु हो रहा है। कुबेर जी ने सबको आशीर्वाद दिया और अपने धाम को चले गए।

एक दिन पांडव "आष्णिषेण" आश्रम में संध्या के समय ऋषि का व्याख्यान सुन रहे थे कि वहां अर्जुन सहित इन्द्रदेव आ पहुंचे। सभी को बड़ा हर्ष हुआ। इन्द्र महाराज ने अर्जुन

Scanned by CamScanner

के तप की सफलता का वर्णन किया और अनोखे शस्त्रों की प्राप्ति के बारे में भी प्रसंग चलाया। इन्द्र चले गये। तब युधिष्ठिर ने अर्जुन से कुछ शस्त्रों का चमत्कार दिखाने को कहा।

अर्जुन ने अस्त्र सम्भाले ही थे कि पृथ्वी डगमगाने लगी। तुरन्त ही नारद जी ने आकर उन्हें रोक दिया और महाराज युधिष्ठिर से कहा कि अब तो इनका चमत्कार महाभारत के युद्ध में ही देखना. अब नहीं। सबने उनकी बात को मान लिया। नारद मुनि अन्तर्ध्यान हो गए। पांडव "गिरि प्रस्रवण" पर्वत पर उतर गए। यहां से ऋषि लोमष और घटोत्कच भी इन से विदा हो गए। कुछ दिन यहां ठहरने के बाद पांडव कुरुक्षेत्रांतर्गत "काम्यवन" को ही लौट आए जहां वे पहले ठहर चुके थे।

अब बारहवां वर्ष आरम्भ हो गया था। भगवान कृष्ण इसी स्थान पर सत्यभामा को साथ लेकर पांडवों से सहानुभूति प्रकट करने के लिए आए। सत्यभामा ने द्रोपदी को बताया कि आपके पांचों पुत्र सकुशल हैं और अभिमन्यु के साथ प्रेम से खेलते हैं। सभी प्रकार की विद्याएं उन्हें सिखाई जा रही हैं। ऐसा समाचार देकर वे विदा हुए।

एक दिन दुर्योधन ने पांडवों का मर्म जानने के लिए यात्रा आरम्भ की परन्तु चित्रसेन-गन्धर्व ने उसे गव्य में रोक लिया और कौरव-दल को कैद कर लिया। युधिष्ठिर ने अर्जुन और भीम को भेजकर कौरव-दल को चित्रसैन की कैद से छुड़ाया। दुर्योधन बहुत लज्जित हुआ और आत्महत्या करने लगा। तब शकुनि ने उसे धीरज देकर सम्भाला। कर्ण भी दिग्विजय करके लौट आया, तब दुर्योधन ने 'दिग्विजय यज्ञ का निमन्त्रण पांडवों को भेजा। भीम ने क्रोध में आकर कहा कि अब तो एक वर्ष के बाद बिना बुलाए ही आयेंगे। इसके पश्चात पांडव

"तृण बिन्दुसर" नामक स्थान की यात्रा पर पहुंचे। यहां पर जयद्रथ ने द्रौपदी का हरण करना चाहा परन्तु भीम ने उसे पकड़ लिया। धर्मराज कहने लगे भीम इसे छोड़ दो, क्योंकि यह हमारे सम्बन्धियों में शामिल है। यह सुनते ही भीम ने उसे छोड़ दिया।

इसके पश्चात् धर्ममार्ग को पवित्र बनाने के लिए, पांडव अदितिवन धर्मक्षेत्र में पहुंच गए। वे चाहते थे कि ऋषि, मुनि तथा ब्राह्मणों की सेवा करके अज्ञातवास के लिए उनका आशीर्वाद प्राप्त कर लें।

एक दिन अचानक ही एक ब्राह्मण आंखों में आंसू भरकर कहने लगा कि—महाराज मैं इसी वन का निवासी हूं, आप मेरे कष्ट को दूर करें। पांडवों ने पूछा आपको क्या कष्ट है। ब्राह्मण ने निवेदन किया कि मेरी "यज्ञाग्नि" बनाने की (अरनि) एक वृक्ष पर लटक रही थी। एक मृग उसे अपने सींग में अटका कर ले गया है। जिससे मेरा यज्ञ करना बन्द हो गया है। आप कृपा करें और मेरी यज्ञाग्नि की अरनि तलाश करा दें।

पांडवों ने उत्तर दिया ब्राह्मण देवता आप चिन्ता न करें। हम शीघ्र ही आप की यज्ञाग्नि की अरनि ढूंढ लाते हैं। ऐसा कहकर अरनि ले जाने वाले मृग की खोज करने लगे। सारा जंगल ढूंढ लिया मगर अरनि ले जाने वाले मृग का कहीं पता न चला। बड़ी चिन्ता में पड़ गए और कहने लगे, यदि ब्राह्मण की यज्ञाग्नि की अरनि नहीं मिली तो सारा पुरुषार्थ नष्ट हो जाएगा। इसलिए कुछ देर विश्राम कर लें और जल पी लें फिर दोबारा खोज आरम्भ करेंगे। ऐसा विचार कर एक वृक्ष के नीचे बैठ जाते हैं और सहदेव को प्राचीन सरोवर "सूर्यकुण्ड" से पानी लेने के लिए भेज देते हैं। बहुत समय तक प्रतीक्षा की परन्तु

सहदेव न लौटा। फिर महाराज युधिष्ठिर ने नकुल को कारण जानने के लिए कहा। वह भी चला गया और लौटकर न आया। इसी प्रकार अर्जुन और भीम भी भेजे गए मगर कोई लौटकर न आया। अन्त में महाराज युधिष्ठिर भी उसी सरोवर पर पहुंचे, क्या देखते हैं कि चारों भाई सरोवर की सीढ़ियों पर मृतक अवस्था में पड़े हुए हैं। युधिष्ठिर विचार करने लगे कि यह क्या घटना घटी है।

ऐसा निश्चय करके कि पहले पानी पी लूं फिर विचार करेंगे। उन्होंने पानी को छुआ, तुरन्त ही एक शब्द सुनाई दिया। यह मेरा सरोवर है, मेरे प्रश्नों का उत्तर दिए बिना और मेरी आज्ञा के बिना यदि पानी को छुओगे तो इसी प्रकार मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे जिस प्रकार यह चारों अचेत पड़े हैं।

शब्द सुनते ही युधिष्ठिर रुक गए और प्रसन्नता से कहने लगे कि कहिए आप के क्या प्रश्न हैं, मैं अपनी बुद्धि के अनुसार अवश्य ही उत्तर दूंगा।

यक्ष-युधिष्ठिर संवाद

गूंजती हुई अदृश्य वाणी ने कहा—बताईए।

यक्ष : 1 सूर्यदेव किसके बल से ऊपर उठते हैं ?
2 उनकी किरणों के पास हमेशा कौन चक्कर लगाते हैं ?
3 ऐसी कौन-सी शक्ति है, जिससे वे अस्त हो जाते हैं?
4 किस का आश्रय पाकर वे नभ में टिके हुए दिखाई देते हैं ?

युधि० : 1 श्री पारब्रह्म का बल पाकर सूर्यदेव ऊपर उठते हैं।
2 देवतागण उनके चारों ओर दिन रात चक्कर लगाते हैं।
3 धार्मिक मर्यादा से वे अस्त होते हैं।
4 सत्य की कीली पर टिके रहने से जग का अन्धकार नष्ट करते हैं।

यक्ष : 1 श्रेष्ठ श्रोतिय मनुष्य किसके द्वारा बनता है ?
2 किस कर्म से उत्तम पदार्थ की प्राप्ति होती है ?
3 सहायक वस्तु कौन है ?
4 मनुष्य मतिमान कब होता है ?

युधि० : 1 गुरुमुख से वेद तत्व सुनकर मानव श्रोत्रिय होता है।
2 तप के बल से और ज्ञान की प्राप्ति होने पर उत्तम पदार्थ प्राप्त होते हैं।
3 धैर्य ही हर समय प्राणी का सहायक होता है। वृद्धों की सेवा से ही मनुष्य मतिमान बनता है।

यक्ष : 1 ब्राह्मणों में देव भाव क्या है ?
2 मनुष्य-भाव क्या है ?
3 सज्जन-भाव क्या है ?
4 दुर्जन-भाव भी बताएं कि क्या है ?

धि० 1 ब्राह्मणों में अपने चरित्र का अध्ययन करना उनका देव-भाव है।

Scanned by CamScanner

2 ब्राह्मणों में नर-भाव साधारण लोगों की भान्ति मरना है।
3 तपस्या करना उनका सज्जन-भाव है।
4 दूसरों की निन्दा करना यह उनका दुर्जन-भाव है।

यक्ष : सदाचरण क्या वस्तु है ?

युधि : पुण्य कर्मों की नींव।

यक्ष : इसी प्रकार क्षत्रियों में :—

1 सूरपन क्या कर्म है ?
2 साधु भाव क्या है ?
3 असाधु भाव किसे माना जाता है ?
4 नर भाव क्षत्रियों में कौन कर्म है ?

युधि : 1 शस्त्रास्त्रों का व्यवहार करना, क्षत्रियों में देव-भाव है।
2 यज्ञों का कराना उनका साधु-भाव है।
3 किसी की रक्षा न करना यह उनका असाधु-भाव है।
4 समर भूमि से भागना यह उनका नर-भाव है।

यक्ष : जग में मृतक समान कौन है ?

युधि : जो मनुष्य अतिथि, देवता, नौकरों को सब कुछ होने के बाद भी कुछ नहीं देता और आत्मा, पितरों और शुभ

कर्मों में श्रद्धा नहीं रखता, वह किसी को कुछ देने वाला मुर्दे के समान है। लोहार की धौंकनी के समान वह वृथा ही सांस ले रहा है।

यक्ष : सबसे ऊँचा पद संसार में किसका माना जाता है ?

युधि० : पृथ्वी से बड़ी पदवी माता की है और आकाश से भी ऊँचा पद पिता का है।

यक्ष : वायु से वेगवान कौन है ?
युधि० : चंचल मन वायु से भी अधिक वेगवान है।
यक्ष : तिनकों से अधिक संख्या किसकी है ?
युधि० : चिन्ताओं की संख्या अधिक है।
यक्ष : 1 कौन, किसका सच्चा मित्र है ?
2 सबका अतिथि कौन है ?
3 सनातन धर्म कौन है ?
4 पवित्र अमृत क्या वस्तु है ?

युधि० : 1 प्रवास में साथ निभाने वाला ही सच्चा मित्र है।
घर में स्त्री सच्चा मित्र है।
रोगी का सच्चा मित्र वैद्य है।
मरते समय का सच्चा मित्र दान है।
2 सब का अतिथि अग्नि है।
3 ज्ञानयोग सनातन धर्म है।
4 गोदुग्ध अमृत के समान पवित्र है।

यक्ष : दान की क्या परिभाषा है ?

युधि० : पवित्र यश की अन्तिम सीमा दान है जो सदैव चमकता रहता है और कभी धीमा नहीं पड़ता। अन्तिम समय में दान के फल से यम के दूत यातना देने के लिए उसके समीप नहीं आ सकते।

यक्ष : मनुष्य की आत्मा कौन है ?
युधि० : पुत्र ही पिता की आत्मा का जीता-जागता रुप है।
यक्ष : उपजिविका किसे कहते हैं ?
युधि० : शुभ कृत्यों से कमाए हुए धन को।
यक्ष : प्रधान आश्रय क्या है ?
युधि० : वस्तुदान आश्रय प्रधान है।
यक्ष : देवकृत सखा कौन है ?
युधि० : अचानक पड़ने वाली विपत्ति में स्वयं दया करके साथ देने वाला मित्र।
यक्ष : उत्तम सुख क्या है ?
युधि० : सन्तोष उत्तम सुख है।
यक्ष : उत्तम लाभ संसार में क्या है ?
युधि० : निरोगी काया।
यक्ष : विशाल धन क्या है ?
युधि० : शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान विशाल खजाना है।
यक्ष : प्रधान कर्म धर्म में क्या है ?
युधि० : जीवों पर सदा दया करना।
यक्ष : नया फल देने वाला धर्म में महान क्या है ?
युधि० : वैदिक धर्म जो सदैव नया फल देता है।

यक्ष : धर्म की पराकाष्ठा क्या है ?

युधि० : लोगों की निन्दा तजकर उनके अनुकूल रहना, परन्तु अपना नित्यकर्म अटल रखना।

यक्ष : 1 किस विकार के त्यागने से सबका प्रिय बनता है ?
2 हृदय का शोक किस बात से दूर होता है ?
3 सम्पन्न नर कौन है ?
4 सुख से भरपूर किसे मानें ?

युधि० : 1 गर्व को छोड़ने से सबका प्रिय बन जाता है।
2 अति लोभ त्यागने से सुख मिलता है।
3 कामना त्याग करने से सम्पन्नता आती है।
4 सब भान्ति क्रोध का त्याग ही हृदय के शोक को दूर करता है।

यक्ष : विप्र, नट, राजा, सेवक और भाट इनको धन देने से क्या लाभ है ?

युधि० : ब्राह्मण को धर्मवृद्धि के लिए, क्योंकि यज्ञादि दक्षिणा बिना सफल नहीं होते।
नट-नर्तक को दुनियां में मशहूरी के लिए।
सेवक को धन भोजन स्वच्छता के लिए।
राजा को भय के कारण धन दिया जाता है। जिससे उसकी रक्षा होती रहे।

यक्ष : मित्रों का साथ क्यों छूटता है ?
स्वर्ग कभी भी किस को नहीं मिलता ?

Scanned by CamScanner

युधि० : लालच में फंस कर मित्र छूट जाते हैं।
बुरी संगति में पड़कर कभी स्वर्ग नहीं मिलता।

यक्ष : जल, दिशा, श्राद्ध-समय, विष, अन्न इनका लक्षण क्या है ?

युधि० : जल आकाश में। साधुत्व दिशाओं में। शुचि श्राद्ध प्रिय मित्र का मिलना है। अन्न गउएं ही उपजाती हैं। किसी से मांगना विष के समान है।

यक्ष : क्षमा, लज्जा, तप, दमन का क्या लक्षण है ?

युधि० : गर्मी, सर्दी का सहना क्षमा है।
बुरे कामों से दूर रहना लज्जा है।
अपने मन को रोकना दमन है।
अपने धर्म का पालन ही तप है।

यक्ष : दया, आर्जव, शमन की व्याख्या बताकर आप जल पीवें?

युधि० : सब के सुख की इच्छा यह दया है।
सभी प्राणियों के साथ समान अपने जैसा व्यवहार बरतना ही आर्जव कहा है।
विषय-वासना के परित्याग को शमन कहा गया है।

यक्ष : शोक, मोह, मान, आलस्य को भी समझाइए ?

युधि० : अज्ञान शोक का चिन्ह है।
धर्म का न जानना ही मोह अर्थात् मूढ़ता है।
आत्म-अभिमान कायम रखना ही मान है।
अपने धर्म का पालन न करना ही आलस्य है।

यक्ष : धैर्य, स्थैर्य, स्नान किसे कहते हैं ?

युधि० : इन्द्रियों का रोकना ही धैर्य है।
स्वधर्म से संकट में विचलित न होना स्थैर्य है।
मल मल कर शरीर धोना स्नान कहा गया है।
वास्तव में मन का मल धोने से स्नान की परिभाषा बनती है।

यक्ष : कलुषित काम किसे कहते हैं और दम्भ क्या है ?
पण्डित कौन है, नास्तिक मूर्ख कौन है ?
चुगलपन क्या है, मत्सर किसे कहते हैं ?

युधि० : कलुषित कर्म परिणाम जन्म या मरण की बुरी दशा है।
मन में कुढ़ना मत्सर है।
धार्मिक विचारों वाला पण्डित है।
हरि को न मानने वाला नास्तिक होता है।
जिसका जीवन सतोगुणी नहीं वह मूर्ख है।
अपना दोष दूसरों पर डालना ही चुगलपन है।
दिखलाने के लिए केवल धर्म करना स्वयं उस पर न चलना ही दम्भ या पाखण्ड माना जाता है।

यक्ष : नरक लोगों को किस कर्म से मिलता है ?

युधि० : देवता, ब्राह्मण और वेदों को झूठा—प्रचार द्वारा सिद्ध करने का प्रयास करने वाला नरकगामी होता है।
और भी :—वचन देकर उससे मुकरने वाला जन्म जन्मान्तर तक नरक में जाता है।

यक्ष : धर्मात्मा मनुष्य को क्या प्राप्त होता है ?
प्रियवादी को तथा सोच कर कार्य करने वाले को तथा अधिक मित्र वाले को क्या-क्या प्राप्त होता है ?

युधि० : धर्मात्मा को मरने पर उत्तम गति मिलती है।
प्रियवादी को बदले में प्रेम मिलता है।
सोच कर कार्य करने वाले की उन्नति होती है।
अधिक मित्र सुख का आश्रय है।

यक्ष : सानन्द जग में कौन है ?
वार्ता किसे कहते हैं ?
आश्चर्य क्या है ?
पथ निर्द्वन्द कौन सा है ?

युधि० : अपने घर पर, स्वतन्त्रता से ऋण रहित रहने वाला सानन्द कहा है। जो शाक भोजी हो।
यमराज नित्य प्राणियों का भक्षण करता है परन्तु फिर भी वह तृप्त नहीं होता, यही वार्ता है जो कभी समाप्त नहीं होगी।

लोग दिन रात मर रहे हैं, बाकी फिर भी सदैव जीवित रहने की इच्छा से लम्बे चौड़े प्रोग्राम बनाते हैं, चाहे वे कल ही मर जाएं, यही आश्चर्य है कि मन पर इस बात का कोई प्रभाव नहीं।

पथ निर्द्वन्द वही है, जो बड़ों ने अपनाया और सफलता प्राप्त की।

प्रश्नों के ठीक उत्तर पाकर यक्ष प्रसन्न होकर कहने लगे कि एक भाई का जीवन मांग लो।

युधिष्ठिर महाराज ने उत्तर दिया कि आप भाई सहदेव को जीवन देने की कृपा करें। यक्ष ने आश्चर्य से पूछा, ऐसा क्यों ?

भीम, अर्जुन को जीवित क्यों नहीं कराते ? युधिष्ठिर जी बोले कि महाराज कुन्ती और माद्री हमारी दो माताएं हैं, मैं कुन्ती पुत्र हूं और सहदेव माद्री पुत्र है, दोनों माताओं के एक-एक पुत्र जीवित रहने से उनकी आत्माएं शान्त रहेंगी। इस उत्तर से यक्ष और भी प्रसन्न हो गए और सभी भाईयों को जीवन दान दे दिया।

यक्ष ने धर्मराज का रूप धारण करके कहा कि मैं तुम्हारी बुद्धिमता से प्रसन्न हूं और तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि अज्ञात वर्ष में तुम्हें सफलता प्राप्त होगी।

मैंने ही मृग का रूप बनाकर यज्ञाग्नि अरनि को चुराया था। जिस दिन से भीम बिना आज्ञा के सूर्यकुण्ड से अमृत जल को ले गया था, उसी दिन से नियम भंग होने के कारण तुम्हारे बल तथा बुद्धि की परीक्षा करना आवश्यक था। इस सूर्यकुण्ड को एन्चाटिज् पूल (Enchanted Pool) कहते हैं। यहां के जल का अंगल भाषा में आचमन, जल का स्पर्श यक्ष की आज्ञा लेकर करने से तुरन्त प्रश्नों के उत्तर देने की बुद्धि पैदा होती है। फिर धौम्य ने उन्हें अज्ञातवास की प्रेरणा दी और कहा —

कर अदिति गर्भ में गुप्तवास, दैत्यों को मारा है हरि ने।
छिपकर भी शम्भु जटाओं में, दुनियां तारी है सुरसरी ने।
श्री विष्णुदेव ने धारण कर, वामन स्वरूप जग से न्यारा।
बलि के घर तीन चरण में ही, ब्रह्माण्ड नाप डाला सारा।
सामर्थ्यवान जो होता है, उसका कुछ काम न रुकता है।
बदली में छिपकर सूर्यदेव, जग को प्रकाश दे सकता है।

पांडवों ने सब कुछ समझ लिया और विराट नगर को चल दिए।

Scanned by CamScanner

'युद्धस्थल', धर्मक्षेत्र (अदितिवन) बनाने हेतु दोनों पक्षों में अलग-2 विचार-विमर्श

महाराज युधिष्ठिर :–हे कृष्ण जी ! कुरुक्षेत्र भूमि अन्तर्गत अदितिवन हमें सदैव विजय दिलाता रहा है, इस लिए इसी स्थान को युद्ध क्षेत्र बनाईए। यहां पर देवताओं ने अदिति माता के दर्शनों की इच्छा से इस स्थान को यन्त्रों से सुसज्जित किया हुआ है। यह सब कुछ युद्ध की गतिविधियों में सहायक होंगे। देवगण हमारे पूर्वज हैं, हमें इस स्थान पर उनका पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा।

देवगण तीनों लोकों से अदृश्य रुप में इस स्थान की यात्रा प्रत्येक पर्व तिथि पर करते हैं। यहां से आकाश तथ पाताल के अदृश्य मार्ग भिन्न भिन्न पर्वों पर स्वयं खुल जाते हैं। विज्ञान सम्बन्धित सभी अस्त्र-शस्त्र इस स्थान पर सफल हो सकेंगे। सभी देवताओं के तीर्थ इसी स्थान पर विद्यमान हैं। यह स्थान भूमि का केन्द्र भी है, ऐसा शास्त्रों से पता चलता है। यहां से आकाश और पाताल का छोटे से छोटा रास्ता बताया गया है। कूटनीति भी यहां सफल नहीं होती, क्योंकि यह धर्मक्षेत्र, धर्मारण्य है। इस लिए धर्म की स्थापना के लिए धर्मयुद्ध की घोषणा धर्मक्षेत्र अदितिवन में ही करें।

कौरव सभा में भीष्म द्वारा अदितिवन धर्मक्षेत्र की महिमा

भीष्म जी ने कौरव सभा में विचार व्यक्त किया कि युद्ध का सच्चा निर्णय लेने के लिए धर्मारण्य अदितिवन को ही युद्ध-

क्षेत्र बनाया जाए। क्योंकि इस स्थान में धर्म का निर्णय देने की पूर्ण क्षमता है। उन्होंने अम्बा से सम्बन्धित परशुराम के साथ युद्ध का वर्णन करते हुए कहा कि इसी स्थान की कृपा से मुझे युद्ध में गुरु का आशीर्वाद मिला और मेरा व्रत भंग न हुआ। इसी स्थान पर माता गंगा जो मैथुनि सृष्टि के समय यहां लाई गई थी, अब तक विद्यमान है और हमें सहयोग देती रहेगी। इसलिए इसी स्थान को युद्धक्षेत्र बनाया जाए।

अम्बा के विचार

अम्बा के विचार इस भूमि के प्रति बड़े आदरणीय हैं। उन्होंने कहा कि जब इस तपोभूमि पर तपस्या करके माता अदिति ने देवताओं का कष्ट दूर करके मन को शान्ति प्राप्त की तो क्या मैं भीष्म प्रतिशोध से अपनी आत्मा शांत न कर सकूंगी। ऐसा विचार कर यहीं पर तपस्या करने लगी। शंकर भगवान प्रकट हुए और उन्हें अगले जन्म की बात बताकर, शिखण्डी का रहस्य समझाकर, भीष्म प्रतिशोध से मुक्ति रहस्य बताकर अन्तर्ध्यान हो गए, अम्बा ने शरीर त्याग दिया।

परशुराम की शांति का वर्णन

शास्त्रों की आज्ञा से मार्ग दर्शन पाकर त्रेतायुग पापों से विचलित मन को इसी सूर्यकुण्ड सरोवर में स्नान, तर्पण आदि कर्मों के करने से परशुराम जी ने शांति प्राप्त की थी। कभी-कभी पुण्य पर्वों पर इस तीर्थ के जल पर दोपहर के समय रक्ताभा दिखाई देती है। क्योंकि परशुराम जी ने यहां पर रक्त प्रवाहण किया था।

तीनों लोकों में कुरुक्षेत्र भूमि का महात्म्यम्

(संक्षिप्त नारद पुराण, पृ० 583)

श्लोक : ब्रह्मवेदी कुरुक्षेत्र पुण्य, ब्रह्मर्षि सेवितम्।
तस्मिन वसन्ति ये मर्त्या, ते शोच्या कथ च न ।। (207)

अर्थ : कुरुक्षेत्र भूमि के अन्तर्गत ब्रह्मवेदी स्थान अधिक पुण्य के देने वाला है। यहां बसने वाले ब्रह्मर्षियों को अगले जन्म की उत्तमता के बारे में कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए, वह उत्तम ही होती है।

श्लोक : कुरुक्षेत्रे गमिष्यामि, कुरुक्षेत्रे वसाम्यहम्।
अप्येकां वाचमुत्सृज्य, सर्व पापैः प्रमुच्यते ।। (205)

अर्थ : कुरुक्षेत्र भूमि में प्रायः शिव भक्त, ब्राह्मण, ऋषि-मुनियों का निवास है। जिन का जीवन यम, नियम, स्वाध्याय, भक्ति, पूजा, योगाभ्यास तथा शास्त्रों के पढ़ने. सुनने में व्यतीत होता है। सतोगुण वृत्ति इस भूमि का महान गुण है, जो इच्छुक को सरलता से अभ्यास द्वारा प्राप्त हो जाता है। जो मनुष्य श्रद्धा से कहता है कि मैं भी ऐसे स्थान पर जाऊंगा और वहां रहूंगा तो ऐसे दृढ़ संकल्पी मानव के पाप दूर हो जाते हैं और कामना पूर्ण होती है।

श्लोक : पृथ्व्यां नैमिष, तीर्थमन्तरिक्षे च पुष्करम्।
त्रयाणामपि लोकानां, कुरुक्षेत्र विशिष्यते ।। (202)

अर्थ : पृथ्वी लोक में नैमिषारण्य और स्वर्ग लोक पुष्करराज तीर्थ को अधिक फल देने वाला कहा है, परन्तु कुरुक्षेत्र तीर्थ का फल तीनों लोकों में उत्तम फल देने वाला कहा है।

श्लोक : पांसवोऽपि कुरुक्षेत्राद्, वायुना समुदीरिता।
अपि दुष्कृत कर्माण, नयन्ति परमांगतिम् ।। (203)

अर्थ : कुरुक्षेत्र भूमि की वायु द्वारा उड़ाई हुई धूलि भी मानव के ऊपर पड़ने से उसके पापों को नष्ट करती है। युद्ध में मरने वाले वीरों के रक्त से रंजित कण शरीर का स्पर्श करते ही युद्ध के परिणाम को सामने लाकर विचार शुद्ध बना देते हैं। वासनाएं समाप्त होकर शुभ कार्यों में रुचि बढ़ जाती है। यह इस भूमि-कणों का रसायनिक प्रभाव है।

श्लोक : दक्षिणेन सरस्वत्या, उत्तरेण दृषद्वतीम्।
ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे, ते वसन्ति त्रिविष्टपे ।। (204)

अर्थ : सरस्वती नदी से दक्षिण दिशा में और दृषद्वती नदी (राक्षी) के उत्तर में जो लोग निवास करते हैं, उन्हें प्रकृति की ओर से स्वर्ग के समान जीवन की सुविधाएं प्राप्त हैं। अर्थात् वह भूमि पर होते हुए भी स्वर्ग में निवास करते हैं। सिद्धों को सिद्धि दिलाने में यह क्षेत्र प्राकृतिक रुप से सहायक है।

Scanned by CamScanner

चक्रापुरी (अमीन नगरी) महात्म्यम्

महाभारत के वन पर्व में वैशम्पायन जी जन्मेजय से कहते हैं : हे राजन् कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थों की यात्रा करने वाला फिर आस्तिकपुर चक्रापुरी में जाए।

श्लोक : स्वस्तिक चक्रपुरम गच्छेत्, तीर्थ सवी नराधिपः।
प्रदक्षिणाम् उपावृत्य, गोसहस्र फल लभेत्॥

अर्थ : स्वास्तिक चक्रापुरी (अमीन नगरी) को देखकर उसके चारों ओर प्रदक्षिणा करे, तो सहस्र गौदान का फल प्राप्त होता है। इस नगरी के चारों ओर चक्राकार में नवग्रहों के तीर्थ विद्यमान हैं।

नवग्रह तीर्थों आदि के नाम आजकल इन नामों से बोले जा रहे हैं :—1. शिशमावली 2. गगाना 3. बीजांवाली 4. दलेही 5. गोमतीर्थ 6. आम्बा 7. सूर्यकुंड 8. नारायण कुंड 9. वामन कुंड हैं।

श्लोक : सप्तकुंडपुरे परिधि, स्वस्तिक चक्रपुरुत्तमः।
दर्शनात् मोक्षमाप्नोति, त्रिलोकेषु विश्रुतः॥

अर्थ : यह नगरी सप्तग्रह कुंडों से घिरी हुई है, जिनके दर्शन तथा जल और मिट्टी के स्पर्श से मोक्ष की प्राप्ति होती है। ऐसा तीनों लोकों में सुना जाता है।

(पं० आत्माराम कृत सूर्यकुंड महात्म्यम् से)

और भी—भगवान कृष्ण जी धर्मराज युधिष्ठिर से भीष्म पर्व महाभारत में कहते हैं कि आपका मन राज-काज में नहीं लगता। युद्ध के उपरांत मन खिन्न हो गया है, इसलिए भीष्म पितामह के पास चलो।

श्लोक : सर्व सुसिद्ध राजेन्द्र, गम्यतां च पितामहम्।
धर्म बुध्वातु युञ्जीत, राज्य कुरु मदाज्ञया॥

अर्थ : हे राजेन्द्र! यात्रा सफल हुई, अब पितामह भीष्म के पास जाकर धर्म को जानकर, मेरी आज्ञा से राज्य कीजिए।

श्लोक : युधिष्ठिर स्तदा ज्ञात्वा, भीष्म धर्म भृताम्बरम।
गत्वा प्रणम्य स्वस्थश्च, नीत्या प्रश्नमचो करत॥

अर्थ : तब युधिष्ठिर जी ने कहा हे योगेन्द्र! मैं आपकी शरण में आया हूं। मुझे शिक्षा दें कि गृहस्थियों के लिए कौन-सा श्रेष्ठ धर्म माना गया है।

भीष्म द्वारा सूर्यकुंड की भूगौलिक स्थिति का वर्णन तथा महात्म्यम्

भीष्म-उवाच : एतत्क्षेत्र ब्रह्म सदनं, कृते भाषित मुत्तमम।
कुरुक्षेत्र देवयजनं, द्वापर, त्रेता, युगेषु च॥

अर्थ : यह कुरुक्षेत्र भूमि सतयुग में ब्रह्मसदन से उत्तम कही गई है त्रेता और द्वापर में देवताओं का तपस्या का स्थान कही गई है।

श्लोक : इतो गच्छेतु राजेन्द्र, सरस्वत्यास्तु दक्षिणे।
कुरुणाम तु कृतंतीर्थ, विस्तीर्ण योजना युतः॥

अर्थ : हे राजेन्द्र! जिस स्थान पर मैं लेटा हुआ हूं, इस स्थान से चलकर सरस्वती नदी के दक्षिण में कुरु राजा का बनाया हुआ, एक योजन विस्तार का कुरुक्षेत्र नाम का तीर्थ है।

श्लोक : तत्तीर्थात् दक्षिणे भागे, एक योजन नानतः।
आदिवनं धर्मारण्य, स्वस्तिक चक्रपुरं ततः॥

अर्थ : कुरुक्षेत्र तीर्थ से दक्षिण दिशा में एक योजन अर्थात् चार कोस की दूरी पर आदिवन जिसे धर्मारण्य भी कहते हैं, वहां स्वस्तिक चक्रापुरी नामक नगरी है।

श्लोक : नगरस्य पूर्वदिक भागे, आदित्य कुंड मुच्यते।
तत्तीरे वनखन्डी, अदिति आश्रम युज्यते॥

अर्थ : उस नगरी के पूर्व दिशा में आदित्य कुंड कहा है। उसी के किनारे से बनखण्डी और अदिति आश्रम जुड़ा हुआ है। उस कुंड में स्नान से ही आपके मन को शांति मिलेगी और राज्य कार्य में मन लगेगा।

स्वस्तिक चक्रापुरी के तीर्थों का महात्म्यम्

वामन कुंडस्य अग्नेया, पावन बुध तीर्थम्।
स्नात्वा यत्र दीर्घायुर्भवन्ति सर्वदा नराः॥

अर्थ : वामनकुंड से अग्निकोण दिशा में बुध का तीर्थ है जहां, स्नान करने से लम्बी आयु होती है। अल्पायु दोष दूर होता है।

श्लोक : ग्रामाद-आद्य शोभते-सोंमतीर्थ।
भूगर्भान्तरे यत्र, सोमस्यो यजन॥

अर्थ : गांव में पहिले अग्निकोण में सोमतीर्थ है। यहां सोम मन्दिर भूमि के अन्दर बताया जाता है और सीढ़ियां तीर्थ की कांच की बताई जाती हैं। यहां से प्रचीनतम पत्थर की मूर्तियां प्राप्त हुई थीं, जो चोरी हो गई थीं, गांव ने उन्हें अपने प्रयास से वापिस मंगवा लिया है। यह मूर्तियां सत्तर हजार डालर की विलायत में बिक चुकी थी। मगर गांव ने बेचना उचित नहीं समझा, क्योंकि यह समस्त भारत की प्राचीनतम विभूति है। यह मूर्तियां आदिदेव मनु-शतरुपा की हैं—इन के अवश्य दर्शन करें। यहां पर आज भी "आसारे कदीमा" के बोर्ड लगे हुए हैं। यहां पर खुदाई करने का प्रतिवन्ध लगा हुआ है। इस तीर्थ पर चन्द्रमा ने तप किया और क्षयरोग से मुक्ति प्राप्त की। यहां पर नित्य प्रतिदिन स्नान करने से क्षयरोग दूर हो जाता है। आजकल मूर्तियां गांव के अन्दर स्थित मन्दिर मनसा देवी के अन्दर स्थापित की हुई हैं।

श्लोक : नैऋत्यां गुरु, अयनं च तीर्थम्।
राजन्-तत्र पावनम् शुक्रतीर्थम्।
वायव्ये च शनि देवस्य कुंडम्।
भौमस्तीर्थं शोभते तत्र एवम्॥

Scanned by CamScanner

अर्थ : नैऋत्य दिशा में बृहस्पति का तीर्थ है। जहां स्नान करने से गुरु शाप दोष दूर होता है।

शुक्र तीर्थ में स्नान करने से शुक्र ग्रह का दोष दूर होता है और शनि कुंड में स्नान करने से साढ़सति दोष दूर होता है। भीम तीर्थ में स्नान करने से मंगल ग्रह का दोष दूर होता है।

श्लोक : काश्यपेन तपं, तपत्वा, मैथुनि सृष्टि हेतवः।
अदितिगर्भ सम्भूता, देवा, सुर मानवः॥

अर्थ : कश्यप और अदिति ने ब्रह्मा जी की आज्ञा से मैथुनि सृष्टि हेतु तप किया और अदिति गर्भ से उत्तम प्रकृति वाले देवता गण, सज्जन मनुष्य उत्पन्न हुए।

भारत के पुण्य तीर्थों में सूर्यकुंड का महात्मयम्

श्लोक : सूर्यतीर्थम् समासाद्य, स्नात्वा नियत मानस.।
अर्चयित्वा तितृन देवानुपवास परायणः॥
अग्निष्ठोम वाप्नोति, सूर्यलोकं च गच्छति।
गवां भवन मासाद्य, तीर्थ सेवी यथाक्रम।
तत्राभिषेकं कुर्वाणो, गोसहस्र फलं लभेत्।
शंखिनी तीर्थमासाद्य, तीर्थ सेवी कुरुद्वहं।
देव्यास्तीथ नरः स्नात्वा, लभते रुपमुत्तमम्।
ततो गच्छेत राजेन्द्र, द्वारपाल अरन्तुकम्।
तत्र स्नात्वा नरो राजन्नग्निष्ठोम फलं लभेत्।
(महाभारत से)

अर्थ : चक्रापुरी अमीन नगरी के पूर्व दिशा में सूर्यकुंड प्राचीनतम तीर्थ है। शुद्ध चित्त होकर यक्ष अरन्तुक द्वारपाल कुरुक्षेत्र भूमि स्थल से आज्ञा लेकर इस कुंड के जल का स्पर्श तथा स्नान करे, पितरों का तर्पण करे, फिर पूजन तथा उपवास रखने से अग्निष्ठोम यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है। सूर्यलोक को जाता है।

गौ माता के समान उपकार करने वाली माता अदिति के भवन के दर्शन करके स्नान करे तो सुन्दरता का वरदान प्राप्त होता है। फिर शंख के समान आकृति वाले कुंड में द्वारपाल अरन्तुक यक्ष की आज्ञा से स्नान करोगे तो सरस्वती देवी का जिह्वा पर निवास होगा और प्रश्नों के तुरन्त उत्तर देने की बुद्धि उत्पन्न होती है।

इसी स्थान पर यक्ष युधिष्ठिर संवाद हुआ था। यह कुरुक्षेत्र भूमि तथा अदितिवन चक्रापुरी के तीर्थों में सूर्यकुंड का महात्म्यम् है।

अदितिवन के तीर्थों में सूर्यकुंड का महात्म्यम्

श्लोक : ततो गच्छेत राजेन्द्र, तीर्थ त्रैलोक्य विश्रुतम्।
आदित्याश्रमो यत्र, तेजोराशेर्महात्मनः॥
तस्मिन तीर्थे नरः स्नात्वा पूजयित्वा विभावसु।
आदित्य लोकं व्रजति, कुल चैव समुद्धरेत्॥
अभिवाद्य ततो यक्षं-द्वारपाल अरुन्तकम।
तंच्चतीर्थ सरस्वत्यां-यक्षेन्द्रस्य महात्मनः॥

तत्र स्नात्वा नरो राजन्नग्निष्ठोम फलं लभेत्।
गंगा ह्रदश्च तत्रैव तीर्थ भरत सत्तम्।
त्रयकोटि फलं तीर्थं, निहत तस्मिन् जले।
तत्र स्नायीत धर्मज्ञ, ब्रह्मचारी समाहिताः॥
राजसूयाश्वमेधाभ्यां, फलं विन्दति मानवः॥
(महाभारत से)

परशुराम द्वारा अदितिवन की प्रशंसा

कुरुक्षेत्रस्य तद् द्वारं, विश्रुत भरतर्षभः।
प्रदक्षिणामु पावृत्य, तीर्थ सेवी समाहितः॥
सम्मितं पुष्कराणां च, स्नात्वार्च्य पितृ देवताः।
जामदग्न्येन रामेण कृतं तत् सुमहात्मनां॥
(महाभारत से)

अर्थ :—महात्माओं को तेज देने वाला, अदिति आश्रम में स्थित तीनों लोकों में प्रसिद्ध सूर्यकुण्ड सरोवर में स्नान करें, फिर सूर्य देव का पूजन करें तो सूर्यलोक की प्राप्ति होती है। कुल का उद्धार हो जाता है। इसी कुण्ड में एक और कुण्ड "गंगाहृद" है, जिसके पाताल में तीन कोटि तीर्थों का जल नीचे ही नीचे आता है, इसलिए उसके स्नान से तीन कोटि तीर्थों की यात्रा का फल प्राप्त हो जाता है। जल का पान करने से धर्मज्ञता प्राप्त होती है। द्वारपाल अरन्तुक यक्ष का निवास इसी अमृत जल की रक्षा हेतु यहां निश्चित किया हुआ है। सरस्वती देवी की कृपा से कण्ठ में माधुर्य गुण उत्पन्न होता है।

परशुराम जी ने त्रेताकृत पापों से मुक्ति इसी सरोवर की अराधना से रक्त प्रवाहण करके प्राप्त की थी और फिर दोबारा उसी महानता को प्राप्त हो गए थे।
—भृगु संहिता

भाद्रपद शुक्ला षष्टी पर्व पर सूर्यकुण्ड स्नान महात्म्यम्

श्लोक : भाद्रपदे शुक्लपक्षे सूर्यष्ठेति विश्रुता।
तस्मिन् दिवसे नरो, स्नात्वा भूयोजन्म न जायते॥
अदितिवन महात्म्यम्, सूर्यकुण्ड स्तथैव च।
श्रुत्वा पठित्वा राजेन्द्र, दुष्प्राप्य प्राप्यते नरः॥
रोगी रोगात्मुच्यन्ते, पितृभीतस्तु तद्भयात्।
गुरुवर्णी जनयेत्पुत्रम्, पितरोयान्ति सद्गतिम।
आदि क्षेत्रे महापुण्यं, भूमि गच्छन्ति भारतेः।
मनसार्थभिकामस्य, कुरुक्षेत्रं युधिष्ठिरः।
पापानि प्रणस्यन्ति, ब्रह्मलोकं च गच्छति॥

अर्थ : अदिति माता ने देवताओं के कल्याण के लिए सूर्यकुंड पर तपस्या की और मार्तण्ड सूर्य को जन्म दिया। मैथुनि सृष्टि का आरम्भ इन्होंने यहीं से किया था। माता ने देवों का कल्याण किया। देव लोग इसे धर्म स्थान कहने लगे। इस स्थान के स्नान फल का लाभ संसार में विख्यात करने के लिए भाद्रपद शुक्ला पंचमी, षष्टी, सप्तमी को विशेष पर्वों का स्थान दिया। यहां के पुण्य कर्मों का फल सुरक्षित रखने के लिए—1. आदित्य

Scanned by CamScanner

नामक सूर्य को 2. उग्रसेन नामक गन्धर्व को 3. भृगु नामक ऋषि को 4. आपूरण नामक यक्ष को 5. शंखपाल नामक सर्प को 6. अनुलोचा नामक अप्सरा को 7. व्याघ्र नामक राक्षस को नियुक्त किया ताकि श्रद्धालु पुरुषों को शुभ कर्म का फल तुरन्त प्राप्त हो सके और बीच में कोई शक्ति फल प्राप्ति में बाधक न बन सके।

(विष्णु पुराण, सूर्य संदर्भ, कल्याण अंक पृ० 177)

अर्थ : भाद्रपद शुक्ला पंचमी, षष्ठी, सप्तमी को पर्व तिथि मानकर स्नान फल विशेष रुप से प्राप्त होता है। पंचमी पाताल लोक के लिए, षष्ठी मृत्यु लोक के लिए और सप्तमी स्वर्गवासियों के लिए विशेष फलदायक है।

महात्म्यम् को पढ़ने-सुनने से अद्भुत कामनाएँ पूर्ण होती हैं। रोगियों के रोग मुक्त होते हैं। बन्ध्या को पुत्र प्राप्त होता है। आंखों की रोशनी बढ़ती है और घर में उत्पन्न क्लेश शान्त हो जाता है।

ऋषियों ने तपस्या करके दीर्घायु प्राप्त की। सूर्य स्तोत्र का पाठ करने से अप्राप्य वस्तु की प्राप्ति होती है।

श्रीमद्भगवत् गीता द्वारा सूर्यकुंड की महानता का वर्णन

कुरुक्षेत्र भूमि के वनों में अदितिवन जो आज भी अमीन गांव के माल रिकार्ड में लिखा मिलता है, इसे कुरुक्षेत्र भूमि-द्वार भी कहा गया है। यह वन यक्ष तुरन्तक स्थान रतगल से आरम्भ

होकर कुरुक्षेत्र की अपनी सीमा के साथ-2 दक्षिण तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र में प्रकृति की ओर से व्यूह रचना का निर्माण शत्रु के लिए अजेय होता है—यही कारण है कि पांडवों ने धमारण्य अदिति वन को असुरों से रहित कर दिया था। इसलिए इस क्षेत्र को धर्मराज युधिष्ठिर का क्षेत्र न कह कर, धर्म स्थान होने के कारण धर्मक्षेत्र ही कहा गया। धर्म के आधार पर न्याय की मांग करने वाले पांडव सेना को व्यूह शब्द से आज तक सम्बन्ध रखने वाले अमीन गांव के क्षेत्र में अर्थात् धर्मक्षेत्र में दुर्योधन ने आचार्य को "व्यूहाकार" में खड़ी पांडव सेना को दिखाया। अन्त में आचार्य ने धोखे से इसी स्थान पर चक्रव्यूह, शंकट-व्यूह, कमलव्यूह, रथचक्र आदि की रचना की थी।

श्लोक : दृष्टवा तु पांडवनीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा।
आचार्यमुपसंगम्य, राजा वचनमब्रवीत ॥
पश्यैतां पांडु पुत्राणामाचार्य महतीचमूम् ॥
व्यूढां द्रुपद पुत्रेण, तव शिष्येण धीमता ॥

(गीता, प्रथम अध्याय, श्लोक 2, 3)

दूसरे पक्ष में कौरव सेना के सेनापति आचार्य, भीष्म और कर्ण के स्थानों के अवशेष आज भी कुरुक्षेत्र की अपनी सीमा पर पाए जाते हैं, जैसा कि कुरुक्षेत्र की अपनी परिधि आठ कोस की है, जो (1) कमलनाभ से आरम्भ होकर (2) सर्वदेव लम्बो (3) अपगया (4) कर्णखेड़ा (5) नरकातारी (भीष्म स्थान) (6) स्थाणीश्वर (7) चतुर्मुख (8) देवी कूप (9) बड़ी प्राची (10) ननदी भौजी (11) सरस्वती (12) कुबेर भंडार (13)

छोटी प्राची (14) मार्कण्डा (15) वृद्धकन्या (यक्ष तुरन्तक) (16) शिवालय खेड़ी राम नगर (17) बाण गंगा (18) कुरुक्षेत्र (19) सन्निहित में समाप्त हो जाती है। कहने का अभिप्राय है कि :—

श्लोक :—धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पांडवाश्चैव किम् कुर्वत संजय ॥

(गीता प्रथम अध्याय, श्लोक 1)

धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र में पांडव सेना तथा कौरव सेना खड़ी है, लड़ने की इच्छा से आए हुए समदर्शी योद्धा मेरे पुत्रों या पांडु के पुत्रों के साथ किस प्रकार का बर्ताव करते हैं जिससे इनके (कृष्ण, भीष्म, आचार्य) के समत्व भाव पर कोई विकार न आ सके। इस लिए हे संजय! आप इनकी गतिविधियों को देखकर मुझे बताओ, ताकि मैं जान सकूं कि वास्तव में समदर्शी भगवान तीनों में कौन सा है।

अर्जुन के कहने पर भगवान कृष्ण अर्जुन को दोनों सेनाओं के मध्य स्थान (ब्रह्माण्ड मध्य) पर अर्थात् प्राचीन पवित्र आदि सरोवर धर्मक्षेत्र स्थित सूर्यकुंड पर रथ को खड़ा कर देते हैं, जहां से आचार्य और भीष्म सेनापति सरलता से दिखाई दे रहे थे। समस्त दृश्य को देख कर अर्जुन मोहग्रस्त हो गया और शस्त्र फेंक दिए। भगवान कृष्ण ने उसकी शंकाओं का समाधान एक क्षण में ही विराट रुप दिखाकर समाप्त कर दिया। अर्जुन का मन विराट रुप दर्शन से भगवान कृष्ण में लीन हो गया अर्थात् विराट रुप दर्शन (छाया पुरुष योगसिद्धि से मन वंशीभूत कर लिया) तब अर्जुन ने योगसिद्धि की दीक्षा मांगी। भगवान ने

कहा कि यदि तुम मेरे कहने के अनुसार युद्ध में निष्काम कर्म करोगे तो गीता ज्ञान के अठारह अध्याय युद्ध के 18 दिनों में निष्काम कर्म योग सिद्ध हो जाएगा। जिस से तुम्हें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होगी। अर्जुन ने स्वीकार किया।

भगवान ने कहा कि हे अर्जुन! यही ज्ञान इसी स्थान पर मैंने पहले सूर्य को दिया था और अब तुझे दे दिया है।

श्लोक :—इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवान हमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह,-मनुरिक्ष्वाकवे ब्रवीत् ॥

अर्थ :—मैंने इस अविनाशी ज्ञान योग को सृष्टि के आदि में इसी स्थान पर सूर्य को दिया था फिर मनु-इक्ष्वाकु से परम्परागत होता हुआ यह ज्ञान राज ऋषियों में पहुंच कर लुप्त हो गया। अब निष्काम कर्मयोग की रीति से यह योग सफल होगा जो तेरे द्वारा कहकर संसार कल्याणार्थ वेदव्यास द्वारा छन्दोबद्ध होगा।

Scanned by CamScanner

अर्जुन की शंका थी कि आप अब और सूर्य पहिले हो था। तब भगवान ने कहा कि हे अर्जुन यह जन्मजन्मान्तर की बातें हैं जो तुम्हें याद नहीं मुझे याद हैं, या इन स्थानों के पवित्र इतिहास इन बातों के साक्षी हैं। इस प्रकार परम्परागत चलने वाला ज्ञान उसी पवित्र स्थान पर दिया जाता है। जहां वह पहले भी दिया गया था। इस प्रकार गीता ज्ञान की जन्मस्थली धर्मक्षेत्र स्थित "सूर्यकुंड" है। जिसे ज्योतिपुंज सर भी कहा गया है। इस की महिमा तीनों लोकों में चारों युगों में, विश्व के तीर्थों में, भारत के तीर्थों में, कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थों में तथा अदितिवन धर्मक्षेत्र के तीर्थों में भी सर्वोत्तम फल देने वाली मानी गई है। यही कारण है कि धर्मक्षेत्र में विस्फुटित धर्मग्रन्थ गीता संसार की सभी भाषाओं में लिखी जा चुकी है और विश्व के कोने-2 में पहुंच गई है।

'इति शुभम्'

नोट :—चक्रव्यूह चित्र को कांसी के पात्र में चन्दन से लिखकर प्रसवकाल में स्त्री को पिलावें तो बालक सुख से पैदा हो जाता है।

Scanned by CamScanner